मैथिल ब्राह्मण संदेश

मिथिला से आए ब्रजस्थ ब्राह्मणों की प्रमुख सामाजिक मासिक पत्रिका

कार्यालयः गली नं 4, ज्वालापुरी, अलीगढ़–202001 (उ0प्र0) मोबाईल नं0:9760689055

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप)

Regd.: U.P.H.W. 23124/24-01-06 T.C. Dated: 30-08-1996

वर्ष–9, अंक–88, www.maithilbrahminmahasabha.in अगस्त–2021

संरक्षक

1. रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु'' (Mob) 8218721824
   एम0ए0बी0एड0 साहित्य रत्न
2. श्रीमती गायत्री देवी शर्मा,अलीगढ़ (Mob) 9058532152
3. रमेश चन्द्र शर्मा, दिल्ली, (Mob) 9312942251
4. सत्यप्रकाश शर्मा, आगरा, (Mob) 9219636927

प्रधान सम्पादक

1. जयप्रकाश शर्मा, अलीगढ़, (Mob) 6395577830
   एम0एससी0(वाटनी), एम0ए0(राज0), पूर्व प्रधानाचार्य

प्रबन्ध सम्पादक

1. चन्द्रदत्त वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, (Mob) 9760689055
   स्वर्ण पदक प्राप्त (पंचगव्य चिकित्सा) (अलीगढ़)

सम्पादक मण्डल

1. रमेश चन्द्र शर्मा (झाँसी) (Mob) 9936526677
2. राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री (आगरा) (Mob) 9760746099
3. के0एस0 शर्मा (मथुरा) (Mob) 8630285841
6. कोमल प्रसाद शर्मा (बिसावर) (Mob) 9719247433
8. हरीशंकर मिश्र (फि0बाद) (Mob) 9927383141
9. डा0 गोपालदास शर्मा (आगरा) (Mob) 7906271486
   प्रधानाचार्य राजकीय मॉडल इं0का0 सैमरा, आगरा
10. डा0 शिवशंकर मैथिल (कासगंज) (Mob) 7906476964
11. आ. पूरन चन्द शास्त्री (अलीगढ़) (Mob) 9412442343

मुद्रक एवं प्रकाशक

स्वामी मैथिल ब्राह्मण सेवा–शिक्षा–संस्कार ट्रस्ट अलीगढ़ की ओर से प्रकाशक एवं सम्पादक जयप्रकाश शर्मा, 1/567–एच, गंगा बिहार, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ द्वारा लिथो कलर प्रैस, अचल तालाब, जी0टी0 रोड, अलीगढ़ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

कम्प्यूटर ग्राफिक्स– राहुल मिश्र, अलीगढ़

MAITHIL BRAHMIN YouTube

अनुक्रमणिका

विषय	पेज नं.
मिथिला वन्दना	2
सम्पादकीय	3
मिथिला से आए ब्रजस्थ.....	4
मेरा समाज	6
20 वीं शताब्दी में हमारा.....	7
गाय में तैतीस करोड...	9
पत्रिका के सम्बन्ध में मिथिला....	10
ब्राह्मणों उठो, जागो.....	11
मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मण	12
रक्तचाप	18
योग एवं योगासन	19
अपने देश में ईमानदारी एवं...	21
चौबीस अक्षरों में गुंथी...	22
एक बाप का फैसला	24
मुस्कुराते रहिये	26
पीपल है ईश्वर के विश्व	27
नीति वचन	28
समाचार	29
वर कन्या सूची	30
विवाह विवरण फार्म	32

–:वंदना:–

शारदा शरदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदासमाकमं सन्निधं सन्निधं क्रियात।।
सरस्वती च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवतां।
देवत्व प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।

–:मिथिला वंदना:–

नित्यस्थलि नित्यलीले नित्यसधाम नमोअस्तु ते।
धन्या त्वं मिथिले देवि ज्ञानदे मुक्तिदायिनि।।
राम स्वरूपे वैदेहि सीताजन्मप्रदायिनि।
पापविध्वंसिके माताभर्वन्धविमोचनि।।
यज्ञदानतपोध्यानस्वाध्यायफलदे शुभे।
कामिनां कामदे तुभ्यं नमस्यामों वयं वदा।।

–:पत्रिका सम्बन्धी नियम:–

- पत्रिका की एक प्रति का शुल्क 10/–रू, वार्षिक शुल्क 120/– है। बुक पोस्ट द्वारा पत्रिका मंगाने के लिए 60 रूपये अतिरिक्त भेजने होंगे।
- पत्रिका के विविध स्तम्भों में सहयोग करने के अतिरिक्त सम्पादक मण्डल के सदस्यों को अपने क्षेत्र में पत्रिका के कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है।
- व्यक्तिगत अथवा किसी संगठन सम्बन्धी आलोचनात्मक लेख नहीं छापे जा सकेंगे। केवल रचनात्मक, सकारात्मक एवं समाजोत्थान सम्बन्धी लेख ही छापे जायेंगे।
- जो लेख नहीं छापे जा सकेंगे, उनको लौटाने की जिम्मेदारी सम्पादक मण्डल की नहीं होगी। लेखक की राय सम्पादक मण्डल की राय से मिलना आवश्यक नहीं है।
- पत्रिका के सम्बन्ध में सुझाव एवं समीक्षा सादर आमंत्रित हैं।
- पत्रिका में विज्ञापन–4 कलर आर्ट पेपर पृष्ठ 2 व 4– 3000/–रू., पृष्ठ 3–2500/–रू. व पत्रिका के अंदर 4 कलर आर्टपेपर आधा पृष्ठ 1500/–रू. व पूर्ण पृष्ठ 2000/–रू.देय होगा।
- वर–कन्या की सूचियाँ एवं लेख कार्यालय के पते अथवा मैथिल ब्राह्मण संदेश के व्हॉटसएप नं. 9259647216 पर ही स्वीकार किये जायेंगे।
- पत्रिका में प्रकाशित लेख–लेखक के अपने व्यक्तिगत विचार होते हैं। पत्रिका के सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- आप अपने लेख (स्वास्थय सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी, सवाल–जबाब, समाज से सम्बन्धित लेख, कहानी इत्यादि) हमें व्हॉटसअप कर सकते हैं।
- आप लेख, जन्मदिन या शादी की वर्षगांठ इत्यादि के साथ–साथ अपना मोबाईल नम्बर अवश्य भेजें, बिना मोबाईल नम्बर के लेख इत्यादि अस्वीकार कर दिये जायेंगे।

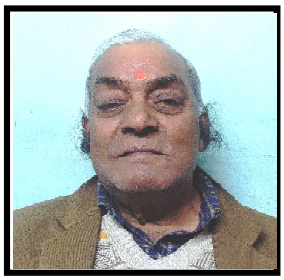

संपादकीय

सच्ची बात

हम मिथिला में शुद्ध ब्राह्मण थे, बृज प्रदेश में आने पर मुगल साम्राज्य तक सुरक्षित, शुद्ध एवं सम्मानित रहे। औरंगजेब के शासन में इधर उधर भागे, असुरक्षित हो गये, अनेक मारे भी गये। मस्तिष्क में प्रश्न आता है कि हमारी विशेष पहचान, वेशभूषा तथा भाषा थी। भाषा तो तुरन्त बदली नहीं जा सकती, परन्तु वेशभूषा तो बदली जा सकती थी, यदि ऐसा हो जाता तो गांवों में नहीं छिपना पड़ता। पाण्डित्य के अतिरिक्त तत्काल समय में अनेक कार्य थे, जैसे कृषि, मजदूरी, छोटी मोटी नौकरियां, दुकानदारी एवं अपना स्वयं का व्यवसाय। पर ऐसा कुछ नहीं हो पाया, कैसे हम लकडहारों के फेर में पड़ गये और अन्त में गांव के काष्ठकारों के सम्पर्क में आ गये।

यह सम्पर्क हमारे जीवन का अत्यन्त दुखद पडाव था, क्योंकि पहले मित्रता कर कार्य सीखना, फिर उनके साथ रहने से बृजभाषा बोलना और पहनाव बदलना, अंत में उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना, यह पूर्वजों की बहुत बड़ी भूल थी, औरंगजेब सदैव के लिये नहीं था, उस कष्टमय समय को बिता हम अपने वास्तविक रूप में आ सकते थे, नहीं आये, यह पूर्वजों की मेरे विचार से दूसरी बड़ी भूल थी, कई लोग अपने काम को भूलते गये तथा काष्ठ कर्म एवं अन्य तकनीकी कार्यों में लगते गये। जो बुद्धि पाण्डित्यकर्म करने, वेदपाठ करने, ज्योतिष एवं अन्य मांगलिक कार्यों में लगनी चाहिये थी, वह तकनीकी एवं काष्ठ कर्म में लग गई। इस प्रकार एक ब्राह्मण किस प्रकार पिछड़ा बन सकता, यह क्रिया पूर्ण हो गई और संतानों पर सदैव के लिये दाग लग गया। गांव के लोग शहर में आये, हम भी आये, उसी गांव में पूर्वजों ने काष्ठ कर्म किया था तो इनकी संतानों को लोग क्या माने, यह सदैव एक प्रश्न चिन्ह के रूप में मन में टंगा रहता है, यद्यपि अन्य गतिविधियों में सुधार हुआ है, परन्तु सामाजिक क्षेत्र में कोई विशेष परिवर्तन नहीं है। पाठक माने या न माने पिछडे वर्ग का प्रमाण पत्र लेने वालों ने स्थिति और बिगाड़ दी है।

हम अर्द्ध मानव बन गये हैं और हमारे स्वाभिमान एवं जाति धर्म की विशेष हानि हुई है। एक प्रकार से हम क्षोभ का जीवन जी रहे हैं, हमसे अच्छी वे जातियां रही, जो हमसे बहुत पीछे रहते हुये भी बहुत आगे निकल गई। अब कैसे हमारा समाज समता मूलक बने, पुराने अभिमान को प्राप्त करे, यह एक यक्ष प्रश्न है। समाज को स्वाभिमान सुरक्षा के लिये इस पर विचार करना होगा। अब स्थिति आधा तीतर आधा बटेर जैसी हो गई है, जो शर्मनाक है, इस स्थिति से कैसे उबरा जाये, विचारणीय है।

– जयप्रकाश शर्मा
प्रधान सम्पादक

मिथिला से आए ब्रजस्थ ब्राह्मणों का आदिमूल– मिथिला ऐतिहासिक प्रमाण

– पं0 रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु''

ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण ब्रज में कब, क्यों, कैसे आऐ ? इस विषय पर स्थानीय बन्धुओं की जिज्ञासा प्राचीन काल से बनी हुयी है, उन्हे सन्देह की दृष्टि से देखा जाता रहा था, जिज्ञासू बन्धुओं के इस भ्रम को दूर करने के लिए बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणों के बृज आगमन के निम्न ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत हैंः–

मुगलकालीन इतिहास– मैथिल ब्राह्मणों का बृज में आगमन गयासुद्दीन तुगलक के समय से माना जाता है। गयासुद्दीन तुगलक के अत्याचारों से पीड़ित होकर सम्वत् 1382 में मिथिला के 75 ब्राह्मणों ने वैशाख शुक्ल एकादशी, रविवार सं0 1382 को तीर्थयात्रा का बहाना कर ब्रजमण्डल में शरण ली। विभिन्न मुस्लिम शासकों के काल में यदा–कदा मैथिल ब्राह्मण बृज मण्डल व आगरा राजदरबार आते जाते रहे, लेकिन अकबर की मिथिला विजय के बाद यह प्रवास नियमित हुआ। राजा टोडरमल के साथ 80 मैथिल ब्राह्मण परिवार आए, जो शहजादी मण्डी, आगरा में बसाये गये। जैसा कि वहाँ के ब्राह्मणों से मिले ताम्र पत्र से यह विदित होता है। आइने अकबरी, अबुल फजल द्वारा लिखित अकबरनामा ईश्वरीप्रसाद लिखित A Short History of Muslim Rule in Indian व ए0एल0 श्रीवास्तव द्वारा The Mugal Empire पुस्तकों में नाम सहित प्रवासित मैथिल ब्राह्मणों के विषय में लिखा है। जहाँगीर के समय में प्रवासित हुए विप्रों का वर्णन जहाँगीर नामा व तुजके जहाँगीरी में शाहजहाँ व उसके बेटे दाराशिकोह के समय में बृज में प्रवासित हुए ब्राह्मणों का वर्णन बनारस गजेटियर व मुहम्मद काजिम लिखित आलमगीर नामा में उल्लिखित है। दाराशिकोह अलीगढ़ का फौजदार था, उसके साथ भी 20 मैथिल ब्राह्मण अलीगढ़ आये।

औरंगजेब जानता था हिन्दू समाज ब्राह्मणों का अनुगामी है, यदि ब्राह्मणों को इस्लाम ग्रहण करा दिया तो समस्त हिन्दू समाज मुसलमान बन जावेगा, अतः ब्राह्मणों को मुसलमान बनाने हेतु संगठित प्रहार कर अत्याचार किए.....सोलह मन थे तुले जनेऊ संख्या ना जानी.....यह ब्राह्मणों का ही बलिदान है। जे0 सरकार द्वारा लिखित Short History of Orangjeb के उक्त प्रकरण व मैथिल ब्राह्मणों का औरंगजेब काल ब्रज प्रवास का विस्तार से वर्णन है। औरंगजेब की हिन्दू (विशेषतः ब्राह्मण) नीति के कारण आगरा छोड़कर, हाथरस, मथुरा, अलीगढ़ जलेसर, अनूपशहर के ग्रामीण क्षेत्रों में मैथिल ब्राह्मणों ने प्रवास किया, जिसको जैसा साधन मिला, वह लिया। ये गाँव ही मैथिल ब्राह्मणों के खेड़ा गोत्र कहलाए।

मिथिलावासियों के ग्रन्थों का आधार– मिथिला के महान इतिहासकार शशिनाथ चौधरीकृत– मिथिला दर्शन, उपेन्द्र ठक्कुर लिखित History of Mithela राधाकृष्ण चौधरी कृत मिथिलांक सेक्षित राजनैतिक इतिहास, डा0 उमेश लिखित– मैथिल संस्कृति व सभ्यता आदि ग्रन्थों में मैथिल ब्राह्मणों ने प्रवास के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा है। इन ग्रन्थों में प्रवासी मैथिल ब्राह्मणों के ग्राम व तिथियाँ भी दी हैं। मिथिला के पंजीकारों ने यहाँ के ब्राह्मणों का पंजीकरण किया है। जीनोम मैपिंग पंजी व्यवस्था के गजेन्द्र ठक्कुर, नगेन्द्र कुमार झा व विधानन्द ने श्रुति प्रकाशन दिल्ली का 2009 में प्रकाशित 5000 पृष्ठ के ग्रन्थ में मैथिली भाषा में मैथिल ब्राह्मणों का बृज प्रवास का वर्णन विस्तार से लिखा है।

बृजवासियों के ग्रन्थों के आधार पर– जैत मथुरा के पं0 रामचन्द्र मिश्र लिखित ''हमारा प्रवास'',

पं0 जयराम मिश्र द्वारा लिखित ''ब्राह्मणोत्पत्ति'', डा0 फूल बिहारी मिश्र द्वारा लिखित ''हमारे प्रवास का इतिहास एवं रघुवीर सहाय शर्मा द्वारा लिखित ''मैथिल ब्राह्मण कब कहाँ कैसे, कोमल प्रसाद शर्मा (दिल्ली) द्वारा लिखित ब्राह्मण दर्पण, डोरीलाल शर्मा श्रोत्रीय द्वारा लिखित एवं राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा द्वारा प्रकाशित ''ब्राह्मण वंशों का इतिहास'', चुन्नीलाल झा द्वारा ब्राह्मण अन्वेषण में बहुत ही विस्तार से मैथिल ब्राह्मणों का बृज में प्रवास विषय पर जानकारी दी है। इनके आधार पर – बैसाख एकादशी दिन रविवार सम्वत 1383 विक्रमी आये देश विसार।।

वैधानिक आधार– जेत मथुरा के पं0 रामचन्द्र केश में निर्णय, तुलसीपत्र एस0डी0एम0 का निर्णय छत्रपाल शर्मा का अलीगढ़ कोर्ट का निर्णय व अन्य ब्राह्मण छोटेलाल शर्मा अजमेर लिखित पुस्तक ब्राह्मण निर्णय में विपरीत टिप्पणी करने पर हाईकोर्ट द्वारा 200 रू0 का अर्थदण्ड आदि अनेक प्रमाण कानूनी है।

वैज्ञानिक आधार– अलाउद्दीन के समय 75 तथा अकबर काल में 80 परिवार के आज लाखों होना आश्चर्य नहीं। 1911 की राजकीय जनगणना के आधार पर 3500 मैथिल ब्राह्मण अलीगढ़ जनपद में थे। जब हर 25 वर्ष में जनसंख्या दुगनी हो जाती है तो आज 2019 में अलीगढ जनपद में मैथिल ब्राह्मणों की जनसंख्या 70000 वैज्ञानिक आधार पर होना स्वाभाविक है।

सामाजिक आधार– 1954 में आगरा, 1959 अजमेर में मिथिला नरेश सर कामेश्वर सिंह का बृजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलनों में भाग लेकर सम्मेलनों की अध्यक्षता करना। दरभंगा राज पुरोहित गंगा सिंह द्वारा ब्रज में स्वजातीय बन्धुओं की स्वीकारोक्ति ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन का मिथिला संघ से सम्बद्व होना, प्राचीन काल से आज तक ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों के मिथिला से शादी सम्बन्ध होना भी इसका प्रमुख प्रमाण है।

एल्युमिनियम और रेफ्रिजरेटर का उपयोग घातक

ऐल्युमिनियम के बर्तन लगभग 100–150 वर्ष पहले ही आये हैं, उससे पहले पीतल, काँसा, चांदी आदि के बर्तन ही चला करते थे। अंग्रेजों ने जेलों में कैदियों के लिए ऐल्युमिनियम के बर्तन शुरू किए क्योंकि उसमें से धीरे–धीरे जहर शरीर में जाता है। ऐल्युमिनियम के बर्तनों से अस्थमा, वात रोग, टी0बी0, शुगर, दमा आदि गम्भीर रोग होते हैं। हमारे पुराने वैज्ञानिकों को पता था कि एल्यूमिनियम बॉक्साइट से बनता है और भारत में इसकी बहुत खदाने हैं, फिर भी उन्होंने एल्यूमिनियम के बर्तन नहीं बनाये, क्योंकि उन्हें पता है इनका उपयोग करने से बीमारियों को बुलावा देना है। प्रेशर कुकर का प्रयोग बन्द करें, प्रेशर कुकर में सब्जी दाल आदि पकती नहीं है बल्कि भाप के प्रेशर से फट जाती है।

रेफ्रिजरेटर का उपयोग कम तापमान पर रहने वाली दवाओं के लिए किया जाता था। लेकिन आज ये रसोई का हिस्सा बन गया है। इसमें से कई जहरीली गैसें निकलती हैं। जैसे CFC के अन्तर्गत CFC-2, CFC-3, CFC-4 से लेकर CFC-12 तक क्लोरीन, फ्लोरीन, कार्बन डाई ऑक्साईड जैसी जहरीली गैसों के उपयोग से बना यह रेफ्रिजनरेटर मूलतः ठंडे देशों के लिए हैं। जहां का तापमान – अंश में चलता है। हमारे यहाँ तो सूर्य का प्रकाश बारह महीने रहता है। इसलिए यहां की समशीतोषण जलवायु के कारण हमेशा ताजा और गर्म खाने का चलन है। इसके अलावा, रेफ्रिजरेटर में सूर्य का प्रकाश और पवन का स्पर्श भी नहीं हो सकता इसलिए इसमें रखा हुआ भोजन भी जहर के समान हो जाता है।

मेरा समाज

– जयप्रकाश शर्मा, प्रधान सम्पादक

दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ मैथिल ब्राह्मण समाज आज अवनति के गर्त में गिरता चला जा रहा है। उसकी उद्‌गम भूमि वह पावन स्थान है, जहाँ पुलह, पुलस्त, कपिल, कणादि, याज्ञवलक्य, गौतम, मैत्रेयी, गार्गी जैसी विश्व प्रसिद्ध ज्ञान विज्ञान मीमाँसा, साहित्य में वर्चस्व रखने वाली प्रतिभाऐं पैदा हुई हैं, कुछ काल खण्ड तक हम बृज में भी उच्च शिखर पर रहे, परन्तु आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं, हम यहाँ मिश्रण के फेर में पड़ गये हैं और हम अपना सत्य एवं वास्तविक रूप गवाँ बैठे हैं। अब इतना घालमेल हो गया है कि आज इस सघन मिश्रण में से मूल तत्व एवं इतर पदार्थों को निकालना टेड़ी खीर हो गया है। इसका किसी के पास कोई मापदण्ड नहीं है कि विभेदन कर सके। हम दिव्य प्रकाश से उत्पन्न हुये और युगों तक प्रकाशित रहे, अब अंधकार रूपी शून्य से धँसे चले जा रहे हैं और बड़ा खेद है कि इसकी तनिक भी किसी को पीड़ा नहीं है। जैसे हिन्दू समाज आर्य, द्रविण, नीग्रो, मंगोल, तुर्क, शक, कुषाण, हूण और कुछ संख्या मुगल तथा यवनों से मिलकर बना है। ठीक इसी प्रकार की स्थिति बृज के मिथिला से आये मैथिल ब्राह्मण समाज की हो गई है। वह भी कई प्रकार के सामाजिक मिश्रण का विशाल भंडार हो गया है। मनुष्य परिस्थितियों का दास है वर्तमान परिस्थितियों में समाज के लिए जो कुछ किया जा सकता है, मैथिल ब्राह्मण महासभा इसके लिए कृत संकल्पित है। उक्त योजनानुसार महासभा पहले अलीगढ़ महानगर पश्चात अन्य क्षेत्र के समाज की जनगणना करायेगी, जिससे कम से कम समाज के लोगों को अपने ऋषि गोत्र, मूलग्राम, देशग्राम, प्रवर, वेद एवं शाखा का ज्ञान तो हो। इसके अतिरिक्त राजनैतिक जागरण के लिए कुल महिला, पुरूष वोटर संख्या एवं ग्रेजुएट वोटर संख्या का ज्ञान हो सके। इसके लिए महासभा को जन तथा धन दोनों की सहायता की आवश्यकता होगी। ऐसा विश्वास है कि समाज के सभी लोग विशेषतः प्रवुद्ध लोग इसमें महासभा का सहयोग करेंगे। जनगणना की सी0डी0 बनवाई जायेगी, महासभा यह भी सोचती है। इससे और समिश्रण नहीं हो सकेगा तथा सामाजिक चेतना एवं सामाजिक दृढ़ता और बढ़ेगी।

प्रबल इच्छा शक्ति ही समाज में दृढ़ता एवं कुशाग्रता बढ़ाती है और ऐसे ही समाज संसार में प्रतिष्ठित हुए हैं। जब आप अपने परिचय में अपने कुल गोत्र, ऋषि, मूलग्राम आदि संवाद करने वाले व्यक्ति को बताते हैं तो वह आपको समझता है। यह सब बातें डरकर नहीं प्रबल एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से बताई जानी चाहिए। मेरा अनुभव है कि इससे बात करने वाले पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। समाज में ज्ञान, अपनी पहचान एवं दृढ़ इच्छा शक्ति समाज की उद्‌धारक है अन्य कुछ नहीं। कर्मकाण्डी तो हम स्वभाव से ही हैं। अंग्रेजी के शब्द **B Positive** का हमें सर्वत्र अनुसरण करना चाहिए, दब्बूपन का नहीं।

******

संसार के समस्त जीवों में केवल गाय ही ऐसा प्राणी है, जिसका बच्चा पैदा होते ही "माँ" शब्द का उच्चारण करता है। सारे संसार को माँ शब्द गौवंश से ही मिला है। गाय के बछड़े को संस्कृत में वत्स कहा है। माँ को ममता के लिए प्रचलित शब्द "वात्सल्य" इसी वत्स शब्द से बना है।

–पू0 नागा बाबा– श्री सर्वेश्वर गौशाला मांट, मथुरा

गतांग से आगे...

20 वीं शताब्दी में हमारा अभ्युत्थान

अपने आपत्तिकाल में मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मणों के १८ वीं शताब्दी के औरंगजेब काल में अपनी मातृभूमि मिथिला से जो सम्बन्ध विच्छेद हो गए थे, वह उन्नीसवीं शताब्दी में पुनः स्थापित होने प्रारम्भ हुए। पुर्नस्थापना के फलस्वरूप मिथिला के महाराजा, पंजीकार तथा विद्वानों का बृज क्षेत्र विशेषकर अलीगढ़ में आगमन प्रारम्भ हुआ तथा बृज के निवासियों का मिथिला जाना प्रारम्भ हुआ।

बीसवीं शताब्दी में मिथिला से आये बृजस्थ ब्राह्मणों ने शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता, प्रशासन, समाजसेवा आदि क्षेत्रों में काफी उन्नति की। बीसवीं शताब्दी में मातृभूमि, मिथिला के साथ हमारे सम्बन्ध घनिष्ठ से घनिष्ठतर हुए।

साहित्य के क्षेत्र में प्रगति

मिथिला से आए ब्रज के ब्राह्मणों में अनेकों साहित्य सेवी हुए हैं, उन्नीसवीं सदी में हाथरस (अलीगढ़) के राजा दयाराम की छावनी में मुंशी रहे पं० मानिक ठाकुर ने ज्योतिष तंत्र, सामुद्रिक शास्त्र, आदि विषयों पर अनेकों ग्रन्थ लिखे। बीसवीं शताब्दी में प्रमुख साहित्यकारों में अलवर के न्याय मंत्री पं० रामभद्र झा थे, यह उच्च कोटि के निबन्धकार थे। इसी काल में जैत, मथुरा निवासी पं० रामचन्द्र मिश्र ''चन्द्र'' अग्रणी कवियों में थे, अपने जातीय जागरण हेतु ''भृगदूत'' नामक काव्य की एवं चन्द्रा भरण नामक मैथिली के अनुपम अलंकार ग्रन्थ लिखा।

पं० रामचन्द्र अपने युग के मान्य ज्योतिषी तथा लेखक थे। आपने ''स्त्री शिक्षा शिरोमणि'' नामक उत्तम ग्रन्थ एवं चूड़ा कर्म संस्कार पद्धति, त्रिपुर सुन्दरी विधान कवच, लक्ष्मी स्त्रोत, दुर्गा स्त्रोत के अतिरिक्त एक पंचाग का निर्माण किया, जो अपने समय में काफी प्रचलित रहा। इनके अतिरिक्त अलीगढ में पं० चुन्नीलाल झा, आगरा निवासी पं० बृजमोहन झा, पं० सेवाराम झा, अलीगढ के पं० फूलचन्द्र मिश्र, झांसी के पं० मोहनलाल झा, सलेमपुर (हाथरस) के पं० रूपराम शर्मा, पं० डोरीलाल श्रोत्रीय, अलीगढ एवं डा० फूल बिहारी शर्मा अलीगढ ने भी साहित्य जगत में अभूतपूर्व कार्य किया।

वर्तमान काल में पं० रघुवीर सहाय शर्मा अलीगढ ने भी साहित्य जगत में काफी कार्य किया है। आपकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनायें निम्न हैं। मंथन, वैष्णवी, अमरधाम, विरह शतक, काव्य नाटिकाएं, सांध्य दीप, अर्पण असुर भयावनि, रामजन्म भूमि चालीसा, प्रेरणात्मक कहानियाँ, बृज में मैथिल ब्राह्मण कब कहाँ कैसे, लोकगीत संग्रह, कलयुगी महाभारत, राष्ट्रगीत गीतमाला, कोरोना चालीसा आदि। इस पत्रिका में भी आपकी रचनायें छपती रहती हैं।

हमारे समाज की साहित्यिक गतिविधियों का यह संक्षिप्त परिचय अत्यन्त उत्साहवर्धक है। वह दिन दूर नहीं जब हमारे समाज के अनेक सदस्य अपनी प्रतिभा से देवी सरस्वती के मंदिर को अलंकृत करेंगे।

समाजसेवा तथा राजनीति

मिथिला से ब्रज क्षेत्र में आये ब्राह्मणों में समाज सेवियों की एक लम्बी परम्परा रहीं है। किन्तु राजनीति के क्षेत्र में हमारे समाज ने विशेष उन्नति नहीं की। हमारा समाज राजनीति प्रिय

नहीं है। समाजसेवा और राजनीति दोनों अन्योन्याश्रित हैं और दोनों के क्षेत्र मिलते जुलते हैं। समाज सेवा की दृष्टि से मथुरा निवासी पं० चिरंजीलाल श्रोत्रीय ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया था। आप मथुरा के प्रसिद्ध वकील व नगर पालिका के अध्यक्ष रहे थे। अलीगढ के पं० सर हरगोविन्द मिश्र ने स्वतन्त्रता के बाद राजनीति में भाग लेना प्रारम्भ किया। आपको उ०प्र० का एम०एल०सी० मनोनीत किया था। राजनीति में क्षेत्र में पं० ज्वालाप्रसाद शर्मा ने विशेष कार्य किया, आप अलीगढ़ के मूल निवासी थे, लेकिन आपका कार्य क्षेत्र अजमेर रहा। स्वतन्त्रता के बाद आप लोकसभा के सदस्य चुने गये। आप राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी रहे थे।

सामाजिक संगठन के क्षेत्र में

मिथिला से आए ब्राह्मणों में सामाजिक संगठन के प्रयत्न उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम समय में प्रारम्भ हो गए थे। सन् १८८२ में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी ने मिथिला सहित सम्पूर्ण देश को भ्रमण के बाद ''मैथिल सिद्धान्त सभा'' की स्थापना की। इस संगठन का कार्य ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था व्यवस्थित करना था। स्वामी जी के बाद संगठन का संचालन पं० चुन्नीलाल झा, पं० बुद्धिसागर झा, पं० रामचन्द ठक्कुर तथा पं० फूलचन्द मिश्र ने किया। तत्पश्चात पं० ताराचन्द ठक्कुर, पं० होतीलाल ठक्कुर, पं० कुन्दनलाल झा ने सिद्धान्त सभा का कार्य संभाला। सिद्धान्त सभा ने उस समय चोरी छिपे जाति में घुस आने वाले विजातीय व्यक्तियों को पहचानने और उन्हें निकालने में बड़ी तत्परता दिखाई। इस कार्य में पं० रामलाल झा तथा पं० शंकरलाल झा विशेष सक्रिय थे।

जाति के दूसरे महत्वपूर्ण संगठन ''ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन आगरा'' की स्थापना १९२२ में हुयी। इसके संस्थापकों में पं० ठाकुरदास झा तथा श्री बृजमोहन झा ने बड़े अध्यवसाय का परिचय दिया। बृजस्थ सम्मेलन के आगरा तथा अजमेर सम्मेलन के महाराजाधिराज दरभंगा श्रीमान कामेश्वर सिंह जी भी उपस्थित रहे थे। अजमेर की मैथिल सेवा समिति, अलीगढ की ब्रह्मानन्द क्रान्तिकारी परिषद, मैथिल ब्राह्मण जाग्रति समिति व मैथिल ब्राह्मण महासभा की स्थापना कर समाज के संगठन का कार्य अनवरत जारी है। ******

माँ

उमा पाराशर, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़

माँ ईश्वर का दूसरा रूप
माँ ठंडी छांव जाड़े की धूप
माँ ममतामयी माँ शांतिरूप
माँ वात्सल्य के विविध रूप
वो भाग्यवान जिनकी माँ हैं
माँ की सेवा प्रभु सेवा है
जो प्रथम भोग माँ को देता
उसको प्रभु अपना लेता है
माँ ने ही सब संस्कार दिये
जिस पर चलकर हम सभी जिये
माँ ने ही जीना सिखलाया
माँ ने जलाये सुख के दिये
माँ ना होती हम ना होते
बिन माँ मरते रोते रोते
साकार प्रभु की माँ मूरत
ईश्वर जैसी उसकी सूरत
ईश्वर का कभी न देख पाये
माँ के दर्शन से सब पूरत
माँ इतने सारे गुण है
लिखने में लेखनी रूक जाये
माँ असीम, अपरमित स्नेहित
स्याही सूखे सब थक जाये
माँ का आशीष स्वर्ग जैसा
माँ का स्पर्श सरल बैसा
माँ स्वयं गरल पी सकती है
सुख देती माँ सबको ऐसा

गाय में तैतीस करोड देवताओं का वास

मुक्त कण्ठ से गौ महिमा का गायन किया गया है, जिसका कुछ संकेत भर निम्न श्लोकों में किया जा रहा है। गौमाता हमारी सर्वोपरि श्रद्धा का केन्द्र है और भारतीय संस्कृति को आधारशिला है। वस्तुतः गौमाता सर्वदेवमयी है। अथर्ववेद में उसे रूद्रों की माता, बसुओं की दुहिता, आदित्यों की स्वसा और अमृत की नाभि संज्ञा से विभूषित किया गया है।

माता रुद्राणां दुहिता बसूनां। स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्ये नाभिः ।।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार गौ में तैतीस करोड़ देवताओं का वास है। उसकी पीठ में ब्रह्मा, गले में विष्णु और मुख में रूद आदि देवताओं का निवास है। यथा–

सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः।पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णु मखे रुद्रः प्रतिष्ठितः।

यही कारण है कि यदि सम्पूर्ण तैतीस कोटि देवी – देवताओं का षोडशोपचार पूजन करना हो तो केवल एक गौ माता की पूजा और सेवा करन से एक साथ सम्पूर्ण देवी – देवताओं की पूजा सम्पन्न हो जाती है। अतः प्रेय और श्रेय अथवा समृद्धि और कल्याण, दोनों की प्राप्ति के लिए ''गौ सेवा'' से बढ़कर कोई दूसरा परम साधन नहीं है।

महाभारतकार ने गौ स्तुति करते हुए लिखा है–

गावः श्रेष्ठा पवित्राश्च पावना जगदुत्तमाः। ऋते दधि घृताभ्यां च नेह यज्ञः प्रवर्तते। गावो लक्ष्म्याः सदा मूले गोषु पाप्मा न विद्यते। मातरः सर्वभूतानां गावः सर्व सुख प्रदाः।।

अर्थात गौएँ सर्वश्रेष्ठ , पवित्र , पूजनीय और संसार भर में उत्तम है। इनके घी, दूध दही और गव्य के बिना संसार में यज्ञ सम्पन्न नहीं होते। ''गो'' में सदेव लक्ष्मी निवास करती हैं। गौ जहाँ रहती है, वहाँ पाप निवास नहीं करते, ये प्राणिमात्र को सुख-सम्पदा से विभूषित करती रहती है। गाय का सम्पूर्ण प्राणियों का माता तथा ''धनं च गोधनं ध ाान्यं गांदयो वृधैव हि'' बताकर गौवंश को अर्थशास्त्र का मूलाधार निश्चित किया है। महाभारतकार ने यह भी कहा है– **''गोधनं राष्ट्रवर्धनम्''**। प्राचीनकाल में जिसके पास जितनी अधिक गायें होती थी , वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था। गोपाल चम्पू में उल्लेख है कि नंदबाबा के पास नौ लाख गायें थीं। मत्स्यराज विराट के पास साठ हजार गायें थीं। हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति से गाय क्यों जुड़ी है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। आज की भौतिकता की अंधी दौड़ में दौड़ रहे शिक्षित वर्ग का केवल श्रद्धा विश्वास की बात समझ में नहीं आती। उसे तार्किक ढंग से गाय की उपयोगिता बताने से ही समझ में आएगी। तार्किक ढंग से गाय के महत्व का समझने के लिए हमें यह देखना-समझना होगा कि गौवंश न केवल धार्मिक दृष्टि से भारत में पूजनीय है, अपितु आर्थिक दृष्टि से भी वह हमारी आर्थिक समृद्धि का आधार है। गाय के योगदान को सरलता के दृष्टिकोण से ३ भागों में विभक्त किया जा सकता है–

१. गाय हमारे धर्म और मोक्ष का आधार है।
२. गाय हमारे स्वास्थ्य का आधार है।
३. गाय हमारी आर्थिक समृद्धि का मुख्य स्त्रोत है।

यहाँ केवल स्वास्थ्य एवं समृद्धि सम्बन्धी जानकारी दी जा रही है, क्योंकि एक तो धर्म व मोक्ष पक्ष से शास्त्र, ग्रन्थ भरे हुए हैं, दूसरे केवल श्रद्धा के आधार पर बात समझ में आ भी नहीं रही है।

–राष्ट्र के अर्थदंड का मेरूदण्ड गौशाला से साभार

******

पत्रिका के सम्बन्ध में मिथिला से आए अलीगढ़ के ब्रजस्थ ब्राह्मणों से निवेदन

पत्रिका परिचय– प्रिय बन्धुओं आपके शहर से मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका २००५ से मैथिल ब्राह्मण समाज शिक्षा, सेवा, संस्कार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की जा रही है, जो अलीगढ़ के नाम को भारतवर्ष में पहुंचा रही है, अलीगढ़ के होने के नाते आपका भी इसके प्रति कुछ दायित्व तो बनता ही है। बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि जिसकी १०० प्रतियां मथुरा, ५० राया, ५० फिरोजाबाद, १०० के लगभग आगरा, २५ जलेसर अवागढ़, २५ डिबाई, २५ सादाबाद, २५ झांसी, २५ हाथरस, २५ कासगंज व २०० पत्रिका का बृज के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में पढ़ी जा रही है, वहीं अलीगढ़ में ५० प्रति भी न बंट पाना लज्जा का विषय है। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि इसमें दोष हमारा है या आपका। यदि हमारा कोई दोष है तो हमें बतायें, अन्यथा आप अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन निष्ठापूर्वक करें।

पत्रिका की विशेषतायें:–

१. मैथिल ब्राह्मण के नाम से यह एक अकेली पत्रिका है, अन्य पत्रिकायें समाज के नाम से पंजीकृत नहीं हैं। सामाजिक पत्रिकाओं के नाम में समाज का नाम होना परम आवश्यक है।
२. यह पत्रिका बैंक बैलेंस को ध्यान में रखकर नहीं छापी जा रही है। १६ रू० लागत की पत्रिका सम्पादक मण्डल के सहयोग एवं विज्ञापन से आपके पास १० रू० में पहुंच रही है।
३. यह अकेली पत्रिका है, जो मासिक है।
४. सामाजिक पत्रिका उस समाज के बौद्धिक स्तर की माप होती है। इस पत्रिका के सम्बन्ध में गुजरात, दिल्ली, फरीदाबाद, अजमेर, झांसी, भोपाल एवं समस्त ब्रज क्षेत्र से सराहनीय फोन प्राप्त होते रहते हैं।
५. इसमें लेख बिना भेदभाव के छापे जाते हैं।
६. आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं। उन पर ध्यान देना हमारा कर्तव्य है।

अतः अलीगढ के प्रबुद्ध मैथिल ब्राह्मण बन्धु इसका प्रसारण अधिक से अधिक कर हमारा उत्साहवर्धन करने की कृपा करें।

आपका अपना
रघुवीर सहाय शर्मा
संरक्षक, मैथिल ब्राह्मण पत्रिका एवं
मैथिल ब्राह्मण महासभा

भोजन, मगर भूख नहीं।
जेबर, मगर रूप नहीं॥
गरम बिछौना, मगर नींद नहीं।
दवा, मगर सेहत नहीं॥
पुस्तकें, मगर विद्या नहीं।
अभिमान, मगर विनय नहीं॥
आसक्ति, मगर शक्ति नहीं।
विलासिता, मगर सादगी नहीं॥
चित्र, मगर चरित्र नहीं।
शस्त्र, मगर अभय नहीं॥
सम्मान, मगर श्रद्धा नहीं।
आराम, मगर राम नहीं॥

संकलन- **इं० के०पी० मिश्र, जूनियर इंजीनियर(से०नि०)ट्रान्स यमुना कॉलोनी, आगरा-६**

ब्राह्मणों, उठो! जागो!! संगठित रहो!!!

संग्रहकर्ता- सौरभ मिश्रा, बी.टैक. आई.टी.
दिल्ली। मोः ९२१२९८१९९५

सबसे पहले ब्राह्मण ने ही, ब्राह्मण का सत्कार किया।
कश्यप बनकर ब्राह्मण ने ही, सृष्टि का विस्तार किया।।
हम उन्हीं के वंशज हैं, यह ध्यान हृदय में रख लेना।
हमने सीखा अपने तप का, फल औरों को दे देना।।
हाथ लेखनी ले हमने ही, वेदों के श्लोक लिखे।
लाखों वर्ष तपस्या करके, लोक और परलोक लिखें।।
सप्त द्वीप नवखण्ड लिखे, फिर सात समन्दर लिख डाले।
गिन-गिनकर नक्षत्र लिखे, गृहों के चक्कर लिख डाले।।
हमी भाष्कर हमी फणीन्दर, भृगुऋषि हमको जानो।
प्रथम राम की कथा लिखी, वह आदि कवि हमको जानो।।
पुराण १८ लिखे थे जिसने, वेदव्यास हम ही तो हैं।
शाकुन्तलम और मेघदूत के, कालिदास हम ही तो हैं।।
हम मनुवादी हम वर्ग नियमों के, निष्ठावान है हम।
वाणभट्ट चाणक्य हमी, और तुलसीदास महान है हम।।
दुनिया वालों की सुनकर गाली, चुप कैसे रह सकते हैं।
सम्मान भले ही करो न तुम, अपमान नहीं सह सकते हैं।।
हम शान्ति पाठ तो करते हैं, पर क्रान्ति भी हमको आती है।
है शास्त्रों का भी ज्ञान हमें, वो शास्त्र हमारी ख्याति है।।
राम-लक्ष्मण और अर्जुन को, हमने ही शस्त्र सिखाये थे।
और लवकुश बालक भी हमने ही, योद्धा श्रेष्ठ बनाये थे।।
दिया कृष्ण को चक्र सुदर्शन, राम को सारंग धनुष दिया।
इक्कीस बार इस फर्सें से, अत्याचारों का नाश किया।।
गुरूद्रोण वन रण खेतों में, हमने ही कीर्ति कमाई थी।
झूल गए अगणित बलशाली, हमसे पार न पाई थी।।
आवश्यकता जब पड़ी देश हित, किया शरीर भी अर्पित है।
अपनी हड्डी से वज्र बना, ये बात विश्व में चर्चित है।।
अतः विप्रगण अपने मन में, हीन भावना मत लाना।
एक सूत्र में बंधे चलो, यदि मान जगत में है पाना।।
जब जीयो ऐसे जीयो, मौत न तुम्हें डरा पाये।
किन्तु मरो तो खूब जिन्दगी, चूम चिता भी मुस्काये।।

******

मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मण

(सामाजिक-परम्परा)

मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मणों की सामाजिक परम्परा- विशेषांक हेतु विविध जिलों में समाज सेवा में समर्पित समाज सेवियों की सूची, जो हमें प्राप्त हुयी है।

तुगलक, खिलजी, मुगल एवं अंग्रेजी और आजादी के उपरान्त ब्रज क्षेत्र में आये मैथिल ब्राह्मणों के उत्थान में सहायक विद्वानों, पाण्डित्यकर्मियों, समाजसेवियों, लेखकों, कवियों, महात्माओं, उद्यमियों, सरकारी कर्मचारियों का परिचय विवरण आज के सामाजिक कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने में सहायक होगा और वे इतिहास का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। सुविधा के लिये इसे तीन कालों में विभाजित करके छापा जा रहा है। प्रथम आजादी से पूर्व के समाजसेवी, द्वितीय आजादी के बाद बीसवीं सदी के समाजसेवी और तृतीय इक्कीसवीं २००० ईसवी के बाद के समाजसेवी। इनका विवरण जिला एवं तहसील के आधार पर देना सुविधाजनक रहेगा।

मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका ने इस गुरूतर कार्य को सम्पादित करने का निर्णय लिया हैं वर्ष के तीन विशेषांकों द्वारा इस कार्य को किया जायेगा।

आजादी के पूर्व के समाजसेवी

जिला अलीगढ़- पूर्व में जिला अलीगढ़ विस्तृत क्षेत्र में रहा है। कोल, खैर, इगलास, हाथरस, सिकन्द्राराऊ, अतरौली, कासगंज, तहसीलें इसके भाग रहे हैं। यहां मिथिला के प्रवासित ब्राह्मणों की संख्या भी अधिक है, इसीलिये इसे मिनी मिथिला भी कहा जाता है। इसमें समाजोत्थान कार्य १९वीं शताब्दी में ही प्रारम्भ हो चुका था। १९०० से पूर्व भी अनेक विद्वानों के मिथिला से सम्पर्क रहे हैं।

तहसील अतरौली (अलीगढ़)

१. सर्वश्री लीकेश्वर शर्मा अतरौली शहर, शंकरलाल शर्मा अतरौली शहर
२. ” ” पं० चन्द्रपाल शर्मा वैद्यजी, भवीगढ़ अलीगढ़
३. ” ” उत्तम चन्द्र शर्मा, पिपलोई
४. ” ” हीरालाल कान्ट्रेक्टर उद्योगपति झिझरका बाद में पक्की सराय
५. ” ” रामप्रसाद शर्मा, मदापुर
६. ” ” पं० खुशालीराम शर्मा, मदापुर अब ज्वालापुरी
७. ” ” पं० होतीलाल, रहमापुर
८. ” ” बाबूलाल शर्मा बांई, बाद में ज्वालापुरी
९. ” ” ठेकेदार मोहनलाल शर्मा, भवीगढ़
१०. ” ” जयप्रकाश शर्मा, भवीगढ़ अब अलीगढ़
११. ” ” उत्तम चन्द शर्मा, ऊतरा
१२. ” ” रामजीलाल शर्मा (रायपुर) चकाथल
१३. ” ” धनीराम शर्मा रहमापुर (ज्वालापुरी) सिद्धान्त सभा के सदस्य

१९५० से २००० ईसवी तक (अति आवश्यक)

मृतक

१. कैलाश चन्द्र शर्मा, दुर्गाबाड़ी (अलीगढ़)- संस्थापक एवं प्रेरक मैथिल ब्राह्मण महासभा
२. फूल बिहारी शर्मा (अलीगढ़)- हमारे प्रवास का इतिहास, ब्रजस्थ सम्मेलन अध्यक्ष
३. ब्रहमदेव ठक्कुर (अलीगढ़)- संस्थापक ब्रह्मानन्द क्रान्तिकारी परिषद अध्यक्ष, पोरोहित्य
४. भूदेव प्रसाद मिश्र ‘हनुमान जी’ (हाथरस)- ब्रह्मानन्द क्रान्तिकारी परिषद, ब्रजस्थ सम्मेलन मण्डल अध्यक्ष, मिथिला कई बार गये। हाथरस सम्मेलन के अध्यक्ष।

५. ओमप्रकाश शर्मा (अवागढ) जलेसर सम्मेलन के अध्यक्ष रहे, समाजसेवा में समर्पित।
६. डा० ताराचन्द शर्मा (मथुरा)- सम्मेलनों के आयोजन, अध्यक्ष भी रहे।
७. डा० एम.पी. शर्मा- अजमेर सम्मेलन में सह अध्यक्ष चुने, राजनीति में भाग लिया।
८. शेषरानन्द (आगरा)- सम्मेलन के महामंत्री २० वर्ष रहे।
९. जमुना प्रसाद (आगरा) सम्मेलन के मंत्री रहे।
१०. कान्ती प्रसाद शर्मा (दिल्ली) मथुरा के रहने वाले १० साल सम्मेलन के अध्यक्ष रहे। केन्द्र के वित्त मंत्रालय में सचिव रहे।
११. जयदत्त शर्मा (अजमेर)- अजमेर सम्मेलन के संयोजक रहे। हाथरस के रहने वाले थे।

जीवित-

१२. दयानन्द मिश्र- दाहौद, क्रान्तिकारी परिषद से जुडे रहे। सासनी (रामपुर) के निवासी- ज्योतिषाचार्य।
१३. डोरीलाल श्रोत्रीय (अलीगढ़)- ब्राह्मण वंशों का इतिहास, मिथिला की पाण्डित्य परम्परा के लेखक।
१४. बाबूलाल शर्मा(अलीगढ़)-ब्रह्मानन्द क्रान्तिकारी परि. व राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा में सक्रिय
१५. रघुवीर सहाय शर्मा (अलीगढ़)- मैथिल ब्राह्मण महासभा अध्यक्ष/संरक्षक।
१६. भूदत्त मिश्रा (अलीगढ़)- राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा के नगर अध्यक्ष।
१७. पं० नन्दलाल शर्मा (अलीगढ़)- राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा के पोरोहित्याध्यक्ष।
१८. जयप्रकाश शर्मा (अलीगढ़)- मैथिल ब्राह्मण महासभा के संरक्षक, प्रधान सम्पादक पत्रिका
१९. रमेश चन्द्र शर्मा (दिल्ली)- संरक्षक मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका, महामंत्री दिल्ली हरियाणा ब्राह्मण महासभा।
२०. रमेश चन्द्र शर्मा (सादाबाद)- राष्ट्रीय अध्यक्ष, ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन
२१. के.एस. शर्मा (मथुरा)- महामंत्री, ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन

अलीगढ़ शहर

१. सर्वश्री चतुर बिहारी लाल शर्मा, पला (खिरनी गेट)
२. " " पं० रामचन्द ठक्कुर, नौरंगाबाद
३. " " पं० भूदेव प्रसाद, नौरंगाबाद
४. " " पं० रमेश चन्द्र, नौरंगाबाद
५. " " पं० ब्रहमदेव ठक्कुर, नौरंगाबाद
६. " " ज्वाला प्रसाद शर्मा, ज्वालापुरी (संस्थापक)
७. " " मलूकचन्द्र शर्मा, मुखिया जी, नौरंगाबाद
८. " " लक्ष्मीनारायन मुखिया जी, ज्वालापुरी
९. " " छिद्दालाल शर्मा, ज्वालापुरी
१०. " " ब्रह्मचारी शर्मा, ज्वालापुरी सिद्धान्त सभी
११. " " छत्रपाल शर्मा, दुबे का पडाव
१२. " " पं० मौनीशंकर शर्मा, रघुवीरपुरी (मथुरा) नगर पालिका
१३. " " दीपचन्द शर्मा, मानसिंह सराय (गोपालपुरी)
१४. " " पं० बाबूलाल झा
१५. " " पं० भवानीशंकर झा
१६. " " पं० सत्यदेव शर्मा

तहसील कोल (अलीगढ़)

१. सर्वश्री लक्ष्मण प्रसाद शर्मा ठेकेदार, नया बास हरदुआगंज
२. " " पन्नालाल शर्मा, स्वतंत्रता सैनानी तालिब नगर (सुदामापुरी)
३. " " मुंशीलाल शर्मा, रामपुर कासिमपुर घनश्यामपुरी (अलीगढ़)

४. ” ” पं० चुन्नीलाल शर्मा, दाऊपुर (अमरौली)
५. ” ” भगवती प्रसाद शर्मा, सुनामई कासिमपुर विकास नगर
६. ” ” अशोक अंजुम, कासिमपुर (चन्द्रपुरी देवी नगला)
७. ” ” अशोक शर्मा, कासिमपुर
८. ” ” शंकरलाल शर्मा, इमलानी (धनीपुर)
९. ” ” दीपचन्द, ढसन्ना
१०. ” ” रामदयाल, सिल्ला (दुर्गाप्रसाद बेटा)
११. ” ” बाबूलाल, बैरमपुर
१२. ” ” ठेकेदार रामचन्द्र शर्मा, शांदलपुर (मडराक) घनश्यामपुरी (उमेश बेटा)
१३. ” ” पं० शीतलदेव, गोपालपुरी
१४. ” ” मास्टर ब्रहमानन्द शर्मा
१५. ” ” पं० गोकुल चन्द्र, बलभद्रपुर (राना) भैंमती

तहसील इगलास + खैर (अलीगढ़)

१. सर्वश्री तोताराम शर्मा, अध्यापक इगलास
२. ” ” जगदीश प्रसाद शर्मा, अध्यापक इगलास
३. ” ” राजपाल शर्मा, भूपाल नगला (दिल्ली अध्यापक नगर)
४. ” ” सुरेश चन्द्र शर्मा (मोटर वाले) इगलास
५. ” ” प्रकाश चन्द्र गौंडा (आगरा)

१८५७ से (गदर) १९४९ तक (आजादी) सभी मृतक

१. ” ” ठेकेदार मोहन लाल शर्मा, भवीगढ़, अलीगढ़
२. ” ” पं० चुन्नीलाल झा, दाऊपुर, कोल, अलीगढ़
३. ” ” पं० गोकुल चन्द्र शर्मा, राना, कोल, अलीगढ
४. ” ” पन्नालाल शर्मा, स्वतंत्रता सैनानी (तालिब नगर) अलीगढ़
५. ” ” लक्ष्मण प्रसाद ठेकेदार, नयाबांस हरदुआगंज, अलीगढ़
६. ” ” चतुर बिहारी लाल (पला) अलीगढ
७. ” ” हीरालाल शर्मा, उद्योगपति (पक्की सराय) अलीगढ
८. ” ” मलूक चन्द शर्मा, मुखिया जी (नौरंगाबाद) अलीगढ
९. ” ” छत्रपाल शर्मा, दुबे का पडाव, अलीगढ
१०. ” ” भूदेव ठक्कुर, नौरंगाबाद, अलीगढ
११. ” ” नवीपुर, कुतुब की सराय, अलीगढ
१२. ” ” बसु मिश्रा वैद्यजी, विजयगढ, अलीगढ
१३. ” ” ज्वालाप्रसाद शाण्डिल्य, अजमेर (एम.एल.सी.)
१४. ” ” जयदत्त मिश्रा, रामगंज अजमेर।
१५. ” ” डिप्टी फूलचन्द शर्मा, मीतई (हाथरस)
१६. ” ” भूदेव प्रसाद मिश्र, खातीखाना, हाथरस
१७. ” ” मनोहरलाल शर्मा (मुरसान) बालूगंज, आगरा
१८. ” ” रामचन्द्र शर्मा (चन्द्रमंडल) जैंत (मंडी रामदास मथुरा)
१९. ” ” पं० मदन मोहन शास्त्री, बलटीला (मथुरा)
२०. ” ” ब्रजमोहन झा, आगरा
२१. ” ” लोचन प्रसाद शर्मा, आगरा।
२२. ” ” पीतम दत्त शास्त्री, आगरा।

१९४७ से २००० ईसवी तक

१. ” ” रमेश चन्द्र शर्मा, सादाबाद
२. ” ” लक्ष्मीनारायण शर्मा, हाथरस

३. ” ” जमुना प्रसाद शर्मा, थरहैरा
४. ” ” जगन्नाथ प्रसाद, मटूरी (सादाबाद)
५. ” ” ओमप्रकाश शर्मा, अवागढ़ मृतक
६. ” ” अशर्फीलाल शर्मा, अवागढ़
७. ” ” कुंवरपाल शर्मा कुंवर, सिकन्द्राराऊ, अलीगढ़
८. ” ” मूलचन्द्र मिश्र, सासनी, अलीगढ़
९. ” ” कन्हैयालाल शर्मा, शहर सासनी, अलीगढ
१०. ” ” लक्ष्मीनारायण शर्मा, हाथरस
११. ” ” डूंगरमल गांधी, हतीशा, मृतक
१२. ” ” ओमप्रकाश शर्मा, मुरसान, अध्यापक से.नि.
१३. ” ” रमनलाल शर्मा, प्रधान, पटा
१४. ” ” प्रेमचन्द शर्मा टाल वाले, मथुरा
१५. ” ” डा. ताराचन्द शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, मथुरा
१६. ” ” डा. एम.पी. शर्मा, मथुरा
१७. ” ” कैप्टन एम.पी. शर्मा, मथुरा
१८. ” ” चन्द्रपाल शर्मा (जगदम्बा वाले) आगरा मृतक
१९. ” ” शेषरानन्द झा, आगरा
२०. ” ” रघुनाथ प्रसाद शर्मा, आगरा
२१. ” ” पं. सोमदत्त अनुरागी, आगरा
२२. ” ” दयानन्द मिश्रा, दाहौद (गुजरात)
२३. ” ” जवाहरलाल, बम्बई (महाराष्ट्र)
२४. ” ” देवकीनन्दन, अजमेर (मैनेजर)
२५. ” ” रमेश चन्द्र शर्मा, झांसी
२६. ” ” प्रेमदत्त मैथिल, मथुरा, मृतक
२७. ” ” इन्द्रपाल शर्मा, खेरिया (गभाना)
२८. ” ” रामजीलाल शर्मा, रायपुर (अतरौली) प्रवक्ता
२९. ” ” जमुना प्रसाद शर्मा, आगरा मृतक

२००० से २०२१ (बीसवीं सदी के बाद)

१. सर्वश्री चन्द्रदत्त वैद्य- प्रबन्ध सम्पादक मैथिल ब्राह्मण संदेश
२. ” ” खगेश चन्द्र शर्मा- अध्यक्ष मैथिल ब्राह्मण महासभा नरौरा,
३. ” ” कामेश चन्द्र शर्मा- सह सम्पादक मैथिल ब्राह्मण संदेश, आगरा
४. ” ” महेन्द्र पाल शास्त्री-प्रदेश अध्यक्ष मैथिल ब्राह्मण महासभा
५. ” ” सत्यप्रकाश शर्मा- संरक्षक मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका आगरा
६. ” ” चन्द्रपाल शर्मा- प्रा०सदस्य राष्ट्रीय ब्रा० महासभा उ०प्र०
७. ” ” मुकेश पाराशर- राष्ट्रीय ब्रा० महासभा उ०प्र०
८. ” ” के०एस०शर्मा- सहसम्पादक मैथिल ब्राह्मण संदेश, राष्ट्रीय महामंत्री ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सम्मेलन
९. ” ” उपेन्द्र झा- सह सम्पादक मैथिल ब्राह्मण संदेश हाथरस
१०. ” ” कुंवरपाल शर्मा- सिकन्द्राराऊ कवि
११. ” ” राजकुमार शर्मा- मैथिल ब्राह्मण महासभा हाथरस
१२. ” ” मुकेश शर्मा- राष्ट्रीय ब्रा० महासभा नवीपुर
१३. ” ” कोमल प्रसाद शर्मा, सह सम्पादक मैथिल ब्राह्मण संदेश सादाबाद
१४. ” ” चुन्नीलाल शर्मा, मैथिल ब्राह्मण संदेश नरौरा, बुलन्दशहर
१५. ” ” किशोर मिश्रा- राष्ट्रीय ब्रा० महासभा

१६. ” ” राजेन्द्र प्रसाद शर्मा- बाल विकास संगठन, फरीदाबाद
१७. ” ” शिवशंकर शर्मा- मैथिल ब्राह्मण महासभा, अजमेर
१८. ” ” जितेन्द्र शास्त्री- राष्ट्रीय ब्रा० महासभा आगरा
१९. ” ” हरीशंकर शर्मा, मैथिल ब्राह्मण संदेश,मंत्री रा०ब्रा०महा०फिरोजाबाद
२०. ” ” के.एम. शर्मा- रा०ब्रा०महासभा जिला अध्यक्ष, लखनऊ
२१. ” ” सुधाकर मैथिल- मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका, कासगंज
२२. ” ” सतीश चन्द्र शर्मा, डिबाई मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका
२३. ” ” रमेश चन्द्र शर्मा- दिल्ली महामंत्री ब्राह्मण सभा दिल्ली
२४. ” ” राजेन्द्र शास्त्री, आगरा- आर.एस.एस.
२५. ” ” मुनीश शर्मा- ब्र०मै०ब्रा०महासम्मेलन, आगरा
२६. ” ” गोपाल प्रसाद शर्मा- मैथिल ब्राह्मण संदेश अवागढ
२७. ” ” ललित कुमार शर्मा, अरौरा, सहपऊ
२८. ” ” दुष्यन्त, गुजरात (अहमदाबाद)
२९. ” ” कालीचरन शर्मा, अरेला, आगरा

१९४७ से २००० (बीसवीं सदी अलीगढ़ शहर)

१. सर्वश्री फूल बिहारी शर्मा- खिरनी गेट, अलीगढ़ मृतक
२. ” ” गंगाप्रसाद शर्मा (हनुमान जी), ज्वालापुरी, अलीगढ़ मृतक
३. ” ” बाबूलाल शर्मा, विकास नगर, अलीगढ़
४. ” ” भूदत्त मिश्रा, एडवोकेट, नौरंगाबाद, अलीगढ़
५. ” ” ब्रहमदेव ठक्कुर, नौरंगाबाद, अलीगढ़ मृतक
६. ” ” बनवारीलाल पाठक, ज्वालापुरी, अलीगढ़ मृतक
७. ” ” भोजदत्त शर्मा, ज्वालापुरी, अलीगढ
८. ” ” पं० खुशालीराम शर्मा, ज्वालापुरी, अलीगढ
९. ” ” नारायन दत्त शर्मा, ज्वालापुरी, अलीगढ़
१०. ” ” दौलतराम शर्मा, ज्वालापुरी, अलीगढ
११. ” ” महावीर प्रसाद आर्य, ज्वालापुरी, अलीगढ मृतक
१२. ” ” वेदप्रकाश शर्मा, ज्वालापुरी, अलीगढ़
१३. ” ” तोताराम झा, ज्वालापुरी, अलीगढ़ मृतक
१४. ” ” रामबाबू शर्मा ठेकेदार, ज्वालापुरी, अलीगढ़ मृतक
१५. ” ” मुंशीलाल शर्मा दरोगा जी, कुंवर नगर कॉलोनी, अलीगढ़
१६. ” ” डोरीलाल श्रोत्रीय, विकास नगर, अलीगढ
१७. ” ” जवाहर लाल शर्मा, बंसल नगर, अलीगढ़ (ब्र.क्रा.परि.)
१८. ” ” रामबाबू शर्मा, विनायका, रावणटीला, अलीगढ
१९. ” ” के०एस० शर्मा, देवी नगला, क्वार्सी बाईपास, अलीगढ, प्र.महामंत्री, रा०ब्रा.महा.
२०. ” ” दानबिहारी शर्मा, देवी नगला, क्वार्सी बाईपास, अलीगढ
२१. ” ” ओमप्रकाश शर्मा, बेगम बाग, अलीगढ
२२. ” ” के.के. शर्मा, बेगम बाग, अलीगढ
२३. ” ” कैलाश चन्द्र शर्मा, दुर्गाबाडी, अलीगढ मृतक
२४. ” ” जयप्रकाश शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ
२५. ” ” जगवीर प्रसाद शर्मा, विश्व हिन्दू परिषद, रामघाट रोड, अलीगढ
२६. ” ” पं. गंगदेव शास्त्री , बरौला, अलीगढ
२७. ” ” शिवचरन लाल शर्मा, गोपालपुरी, अलीगढ
२८. ” ” महावीर प्रसाद शर्मा, अध्यापक, जयगंज, अलीगढ
२९. ” ” अयोध्या प्रसाद शर्मा प्रोफेसर, बेगम बाग, अलीगढ मृतक

३०. ” ” वंशीधर मिश्रा, मठिया, अलीगढ मृतक
३१. ” ” सुरेश चन्द्र शर्मा, विशाल ट्रान्सपोर्ट, गांधी नगर, अलीगढ
३२. ” ” सन्त कुमार शर्मा, छावनी, अलीगढ
३३. ” ” चन्द्रमणि शर्मा, अलीगढ़
३४. ” ” सेवाराम शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, अलीगढ
३५. ” ” राजकुमार मिश्र, अलीगढ
३६. ” ” सत्येन्द्र कुमार शर्मा, अलीगढ

विशेष आग्रह

बन्धुवर, आगामी विशेषांक हेतु सामाजिक कार्यकर्ताओं का जीवन परिचय प्रकाशित करने के लिए उपरोक्त नाम अभी तक प्राप्त हुए हैं। यदि आपको लगता है कि आपके क्षेत्र के अथवा परिचित बन्धु ने भी समाज का बहुत कार्य किया है (चाहे वह संसार में है या नहीं) तो आप अविलम्ब कदम उठायें, उनका जीवन परिचय व उनके द्वारा समाजोत्थान हेतु किए गए कार्यों का विवरण व एक फोटो पत्रिका के व्हाटसएप नं. 9259647216 पर भेज दें।

दो ज्योतिषी

एक बार अकबर ने एक सपना देखा। सपने में उसरे सारे दाँत गिर गए थे। केवल एक दाँत बच गया था। सुबह होते ही अकबर ने एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को महल में बुलाया और उससे सपने का अर्थ पूछा। कई ग्रन्थों को देखने के बाद ज्योतिषी ने कहा, ‘‘बादशाह सलामत! आपका सपना सच्चा नहीं है।’’

अकबर ने कहा, ‘‘सपने का जो भी मतलब हो, साफ–साफ कहो।’’

ज्योतिषी ने कहा, ‘‘आपके सभी दाँत गिर जाने का मतलब है कि आपके सभी सगे– सम्बन्धी आपकी नजर के सामने ही एक एक करके मर जायेंगे। आपका एक दाँत रह गया, मतलब यह कि अंत में आप संसार में अकेले ही रह जायेंगे।

ज्योतिषी की बात सुन कर अकबर को बहुत गुस्सा आया। उसने तुरन्त ज्योतिषी को महल से निकाल दिया।

अकबर के दरबार में एक दूसरा ज्योतिषी भी था। अकबर के कठोर व्यवहार से वह काँपने लगा। उसने समझ लिया कि अब उसे बादशाह की नाराजगी सहनी पड़ेगी। वह उसी समय बीरबल के पास पहुँच गया और उसकी सलाह ली। थोड़ी देर बाद सचमुच बादशाह का एक सिपाही उसे बुलाने आया।

अकबर ने उसे भी अपने सपने की बात बताई और उसका अर्थ पूछा। ज्योतिषी ने थोड़ी देर सोचकर कहा, ‘‘आपका सपना तो बहुत ही अच्छा है। आपके सभी सगे– सम्बन्धियों की अपेक्षा आपकी उम्र लम्बी है। बहुत समय तक आप सुख से राज्य करेंगे और आपके राज्य में प्रजा सुखी रहेगी।

यह सुनकर अकबर बहुत खुश हुआ। उसने ज्योतिषी को इनाम दिया। ज्योतिषी आशीर्वाद देकर अपने घर लौटा। बीरबल की सलाह से एक ही बात को दूसरे ढंग से कहने पर ज्योतिषी को काफी लाभ हुआ।

******

रक्तचाप

– हनुमान प्रसाद मिश्र, आगरा आयुर्वेदाचार्य

बढ़ा हुआ रक्तचाप (High Blood Pressure)– हृदय जब दबकर धमनियों, इसकी शाखाओं और अनेक छोटी-मोटी कोशिकाओं द्वारा रक्त को शरीर के प्रत्येक भाग में निरन्तर पहुंचा कर उसका पोषण करता है तो इस क्रिया को रक्तचाप कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का रक्तचाप उसकी आयु और उसके काम पर निर्भर करता है। क्रोध, मानसिकतनाव, स्त्रीप्रसंग, दिलचस्प दृश्य देखने, भोजन करने के बाद घबराहट, भय, जोश के समय रक्तचाप बढ़ जाता है।

उपर्युक्त कारणों के अलावा उच्च रक्तचाप का कारण धमनियों का रास्ता छोटा हो जाना है। मैदा की बनी चीजें, मसाला, चीनी, खटाई, तेल, तली सब्जी, रबडी, मलाई, मांसाहार आदि वस्तुएं भोजन में लेना, बार-बार और अधिक भोजन करना, नशीली वस्तुओं का सेवन, चिन्ता, क्रोध, भय पुराना उपदंश, कब्ज, आंव के कारण कोलेस्ट्राल बढ़ जाता है जिससे धमनियों की दीवारों में चिप-चिपा दूषित पदार्थ जम जाने पर धमनियों का रास्ता संकीर्ण हो जाता है। रक्त को आगे बढ़ाने के लिए हृदय को जोर लगाना पड़ता है जिससे रक्तचाप बढ़ जाता है। रक्तचाप के रोगी के सिर में चक्कर आना, किसी काम में मन नहीं लगना, श्वास कष्ट, नींद की कमी, सिर दर्द, पाचन शक्ति की कमी, चिड़चिड़ापन, कभी-कभी नाक से खून गिरना, सिर में दर्द आदि लक्षण होते हैं। रक्तचाप नापने के लिए Sphynomano Metre नामक यंत्र आता है। स्वस्थ मनुष्य का रक्तचाप साधारणतः १२० मिलिमीटर होता है। ११० मिलिमीटर रक्तचाप घटा हुआ रक्तचाप है।

उच्च रक्तचाप को रोकने के लिये स्वास्थ्य रक्षा के साधारण नियमों को पालन करना चाहिए। भोजन खूब चबा-चबा कर खाना, भोजन के समय जल न पीना, भोजन के दो घंटे के बाद खूब जल पीना, नींबू रस मिला जल दो-तीन बार पीना, भोजन करने के बाद कम से कम १०० कदम चलना, पेशाब करके थोड़ा आराम करना, उष्म-पान करना, प्रातः यथा सम्भव टहलना, सूर्यास्त के पूर्व भोजन करना, सूर्योदय के पूर्व सोकर उठ जाना, शान्त एवं प्रसन्न चित रहना, कब्ज न होने देना, सप्ताह में एक दिन उपवास करना, दिन में न सोना आदि नियमों का पालन करना चाहिए।

रक्तचाप में औषधियों का प्रयोग बहुत ही हानिकारक है। लिवर पुल के अस्पताल के हृदय रोग चिकित्साक डा० आई हैरिस ने अपना अनुभव लिखते हुये बताया है कि औषधियों द्वारा रक्तचाप की चिकित्सा करना व्यर्थ ही नहीं अपितु औषध सेवन से अपकार ही होता है। उक्त रक्तचाप के रोगी को जलपान में गाजर या खीरे का रस एक गिलास पीना चाहिये। भोजन में सलाद, हरी सब्जी की मात्रा अधिक लेनी चाहिये। कुछ दिनों तक फल एवं सब्जी पर रहना बहुत ही लाभप्रद है। गाय का दूध हितकर है। लहसुन का उपयोग भी उच्च रक्तचाप में बहुत फायदा करता है। रात्रि में सोते समय एक चम्मच त्रिफला चूर्ण लेना चाहिए। औषध में रस राज रस, अश्वगंधा चूर्ण लाभकारी है।

हरे रंग की बोतल का सूर्य तप्त जल आधा-आधा गिलास सुबह-शाम लेना चाहिए। भोजन के बाद लाल रंग की बोतल का सूर्य तप्त जल आधा-आधा गिलास पीना चाहिए। इस प्रकार करने से गुर्दा अच्छी तरह काम करता है और दूषित पदार्थ को बाहर निकाल देता है। पाचन शक्ति बढती है और कोलेस्ट्राल का स्तर कम होता है।

घटा हुआ रक्तचाप (Low Blood Pressure)– अनियमित आहार-विहार ही इसका कारण है। उच्च रक्तचाप में लिखे आहार-विहार का सेवन ही हितकर है। इसमें भी वही औषधियां सेवन करनी चाहिए। रात्रि में सोते समय एक गिलास गर्म जल में एक कागजी नींबू का रस पीना चाहिए। इसके अलावा सुबह-शाम लाल रंग की बोतल का सूर्यतप्त जल पीना लाभप्रद है।

******

योग एवं योगासन

– योगाचार्य पं० भूपेश झा
बेगम बाग, अलीगढ़

भारत में दो प्रकार की आध्यात्मिक निष्ठाएं प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। एक ज्ञान की निष्ठा, जिसे सांख्य कहते हैं और दूसरी योग की निष्ठा, जो योग के नाम से ही प्रसिद्ध है। सांख्य के रचयिता कपिल मुनि हैं। कपिल भगवान के अवतार समझे जाते हैं। योग के रचयिता महर्षि पतंजलि हैं। सांख्य ओर योग दोनों की धाराएं अनादिकाल से प्रचलित हैं, फिर भी इन महर्षियों ने ही शास्त्र रूप में अपने-अपने शास्त्रों का सृजन किया। श्रीमद्भगवद्गीता में सांख्य और योग दोनों का समन्वय है।

भगवान् पतंजलि आयुर्वेदशास्त्र के भी रचयिता हैं और योग के भी। आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति विश्वविख्यात है। प्राणियों को दुखी और रोगग्रस्त देख कर करूणा से भरकर उनके दुख को दूर करने के लिए भगवान् पतजंलि ने चरक संहिता का प्रति संस्कार किया, उन्होंने ही प्राणिमात्र के कल्याण के लिए योग दर्शन की रचना की। योग के आठ अंग हैं। वे इस प्रकार हैं। १.यम २.नियम ३.आसन, ४.प्राणायाम, ५.प्रत्याहार, ६.धारणा, ७. ध्यान और ८. समाधि।

जैसे सिर, धड़, हाथ, पांव आदि समस्त अंगों के योग से शरीर पूर्ण होता है, उसी प्रकार योग के आठों अंगों के संयोग से ही योग सम्पूर्ण होता है। उसका आरम्भ यम नियम से होता है और अन्त समाधि पर होता है। यही कारण है कि आसन केवल व्यायाम ही नहीं, योगांग है। योग सम्पूर्ण करने के लिये शरीर और मन दोनों का स्वस्थ होना आवश्यक है। शरीर रोगी हो, तब भी योग सिद्ध नहीं हो सकता और यदि मन रोगी हो तो भी योग की सिद्धि नहीं हो सकती। योग शब्द का अर्थ होता है- मिलना। आत्मा और परमात्मा के एक हो जाने का, द्वैत मिट जाने का, अद्वैत हो जाने का नाम योग है। मानव जीवन का लक्ष्य यही है कि द्वैत मिटे।

आसन के अभ्यास से पाचनक्रिया निर्दोष बन जाती है, रक्तसंचार समुचित रूप से होने लगता है, श्वास संस्थान पूर्णरूप से अपना कार्य करने में सक्षम हो जाता है, वातनाड़ियों (Nerves) का सम्पूर्ण दोष मिट जाता है और वे स्वस्थ हो जाती हैं। इसी कारण निरोगता की रक्षा सम्पूर्ण रूप से हो पाती है और यदि दीर्घकाल का रोगी भी इसके अभ्यास में लग जाता है, तो धीरे-धीरे वह स्वस्थ होने लगता है और कुछ काल के अभ्यास से वह पूर्ण स्वस्थ हो जाता है। यही नहीं, उसकी मानसिक दशा में भी सुधार होने लगता है। कुछ लोग आसनों के अभ्यास को ही योग समझते हैं। विदेशों में समाधि को तो लोग नहीं समझते, परन्तु उनका खिंचाव आसनों की ओर अवश्य है। आसनों के अभ्यास से द्वैत तो नहीं मिटता, सांसारिक उपलब्धियां, जैसे स्वास्थ्य, यश, धन आदि की प्राप्ति में यह सहायक अवश्य होता है। रक्त में चीनी की मात्रा बढ़ जाने पर या मूत्र में चीनी जाने के रोग में आसनों और उनके सहायक अंगों के अभ्यास से कुछ दिनों में लाभ आरम्भ हो जाता है और धीरे-धीरे रोगी ठीक हो जाते हैं। वैसे ही रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) में भी इस चिकित्सा से लाभ होता है।

हमारा मेरूदण्ड २६ छोटी-छोटी अस्थियों के योग से निर्मित है। इन अस्थिखण्डों को श्रृड़ांटक कहते हैं। आमतौर से इस मेरूदण्ड में रोग उत्पन्न करने वाले विकार आश्रय प्राप्त कर लेते हैं और रोगी व्यक्ति अपने रोग का कारण समझ नहीं पाता। आसनों का कुछ दिन अभ्यास करने से इनमें स्थित विकार विनिष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति धीरे-धीरे स्वास्थ्य के

राजपथ पर अग्रसर हो जाता है। धनुरासन, सुप्तवज्रासन, शलभासन, सर्पासन आदि आसन सीधे मेरूदण्ड पर प्रभाव डालते हैं। वैसे ही मयूरासन सीधे पाचन प्रणाली पर अपना प्रभाव डालता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आसन हमारे हाथ में एक ऐसा अमोध शस्त्र है, जिसके द्वारा रोगरूपी महाशस्त्रु को आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

आसनों के अतिरिक्त दण्ड, बैठक, मुद्गर, हॉकी, फुटबॉल आदि अनेक व्यायाम पद्धतियां प्रचलित हैं। इनसे मांसपेशियों के निर्माण में बहुत सहायता मिलती है। किन्तु इनसे यथेष्ट लाभ नहीं होता। घण्टे दो घण्टे इन व्यायामों का अभ्यास करके व्यक्ति इतना थक जाता है कि फिर उसे दिन भर विश्राम करने की आवश्यकता पड़ जाती है। इस प्रकार का दोष आसनों में तो नहीं है। आसनों से श्रम और शिथिलीकरण दोनों ही क्रिया साथ-साथ होती हैं। इसलिए आसन करने के बाद थकावट नहीं होती, ताजगी, उत्साह और उमंग उत्पन्न होती है। दुनियां का कोई भी व्यायाम इस तरह का दोहरा लाभ पहुंचाने में समर्थ नहीं है।

आसन का स्थान केवल इसलिये अत्यन्त उचित नहीं है कि यह एक श्रेष्ठ व्यायाम है। इसका महत्व इसलिये भी अधिक है कि यह मन के विकारों को शान्त करके उसके एकाग्र होने में या उसे निर्भर बनाने में सहयोगी है। किसी भी प्रकार का रोग हो, सर्वप्रथम मन अस्वस्थ होता है। रोग से मुक्त होने का जो भी उपाय किया जाता है, वह पहले मन को ही स्वस्थ करने का प्रयास होता है। जैसे-जैसे मन स्वस्थ होने लगता है, शरीर भी स्वस्थ होने लगता है। इस दिशा में आसनों का लाभ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र काम के नियंत्रण करने वाले चक्र हैं। बैठकर किये जाने वाले आसनों में एड़ी मूल से इन स्थानों पर विशेष रूप से दबाव डालने की प्रक्रिया की जाती है।

आसन करते समय श्वास की गति को भी नियमित और नियन्त्रित करने की आवश्यकता पड़ती है। यह क्रिया बहुत महत्वपूर्ण है। हम जो कुछ कार्य करते हैं, उसमें रक्त के जीवित कोष नष्ट होते हैं। वे मृत कोष्ठ शिराओं द्वारा संग्रहित होकर हमारे हृदय में आते हैं और वहां से वे फेफड़ों में भेज दिये जाते हैं। फेफड़े में आया हुआ रक्त अशुद्ध होता है, जो शरीर में दोबारा भेजने योग्य नहीं होता। हम जो सांस लेते हैं, उसमें शुद्ध प्राणवायु या ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है। हमारे फेफड़े में हमारी सांस जाती है और वहां रक्त में स्थित विकार को जला देती है। इस दहन क्रिया से कार्बन डाइ ऑक्साइड फेफड़े में बन जाती है। जो सांस हम बाहर निकालते हैं, उसमें कार्बन डाइ ऑक्साइड निकल जाती है और रक्त शुद्ध हो जाता है। इस शुद्ध रक्त को फिर हृदय में भेज दिया जाता है। वहां से धमनियां उसे फिर सारे शरीर में ले जाती है और शिरायें अशुद्ध रक्त ले आती हैं। यह क्रम दिन-रात चलता रहता है और १ मिनट में ४ बार रक्त भेजने और लाने की क्रिया होती रहती है। आसन इस क्रिया को नियन्त्रित रखने में सहायक होता है। इसी कारण आसन करने वाले लोग सदैव युवा दिखाई देते हैं।

सभी प्राचीन ग्रन्थों में आसनों की संख्या समान नहीं बताई गई है। घेरण्ड संहिताकार ने ३२ आसन बताये हैं और हठयोग दीपिका में केवल १६ आसन ही वर्णित है। १६ आसनों में ही स्वास्थ्य के लिये लाभदायक सभी आसनों का समावेश हो जाता है। आसनों के करते समय आसनों की संख्या का महत्व नहीं है, अपितु नियमित रूप से आसनों का अभ्यास करने से लाभ होता है। प्रत्येक अंग में शुद्ध रक्त पहुंच जाय, फेफड़ों में रक्त की शुद्धि पूर्ण रूप से हो जाय, सुषुम्ना नाड़ी विकारहीन हो जाये, वात-नाड़ी संस्थान निर्मल और शुद्ध रहे, अस्थियों में लोच बनी रहे, श्वास-क्रिया पूर्ण रूप से ऑक्सीजन पहुंचाने में समर्थ हो, यही समस्त आसनों का कार्य होना चाहिये। कुछ आसन जैसे पद्मासन, सिद्धासन आदि मन की चंचलता रोकने में समर्थ होते हैं। ******

अपने देश में ईमानदारी एवं मानवता शेष है

आए दिन भ्रष्ट, बेईमान, निर्दयी, ठगों, नेताओं, अधिकारियों के कारनामे पत्र-पत्रिकाओं में पढ़कर लगता है कि इस वातावरण से मानवता, ईमानदारी का लोप हो गया है। परन्तु ऐसा नहीं है, आज भी देश में अनेकों लोग अपनी ईमानदारी, मानवता एवं सहानुभूति का दीपक प्रज्जवलित कर रहे होते हैं। कुछ सत्य घटनाएं प्रस्तुत हैं-

१. १७ अप्रैल २०२१ को अलीगढ़ के रेलवे रोड के अभय को सड़क पर एक पर्स मिला। उसे बिना खोले ही उसने स्थानीय पुलिस थाने में जमा कर दिया। पुलिस ने पर्स में से मोबाईल आदि पाकर उसके मालिक तक पहुंचा दिया।

२. ३१ मार्च २०२० को ऋषिकेश में चार छात्रों को सड़क पर एक पर्स मिला। खोलने पर उसमें ३५०००/-रू० नगद एवं गाडी चलाने का लाईसैंस मिला। वह उसके मालिक तक पहुंचा दिया।

३. जनवरी इसी वर्ष दिल्ली में एन०आर०आई० राणा साहा ने एक ऑटो रिक्शा में से उतरते समय अपना पर्स उसी में भूल से छोड़ दिया। वहां से राणा साहा ने दूसरा ऑटो किया और अपने गंतव्य स्थान पर जाकर उतरते समय जब भाड़ा चुकाने हेतु अपना पर्स देखा तो दग रह गया। उसने उस ऑटो वाले से निवेदन किया कि वह पिछले स्थान पर जाकर उस पहले वाले ऑटो का पता लगाए और उसे सूचित करे। इस ऑटो वाले ने ईमानदारी का परिचय दिया और पिछले स्टैण्ड पर जाकर उस ऑटो को खोजकर पर्स लिया और राणा साहा को सही सलामत वापस पहुंचा दिया।

४. राजीव नारायण दिल्ली में सड़क दुर्घटना में घायल/पीड़ित व्यक्ति को शीघ्र ही उपचार हेतु अस्पताल पहुंचाते हैं। वे यह कार्य विगत ६ वर्ष से कर रहे हैं। यद्यपि उन्हें इस शुभ कार्य में पुलिस तथा डॉक्टरों के अप्रिय प्रश्नों का भी सामना करना पड़ता है। वे निर्भय होकर उत्तर देते हैं पर जन सुरक्षार्थ यह शुभ कार्य करते हैं।

५. नवीं मुम्बई में राजू जोशी आत्महत्या हेतु समुद्र में कूदने वाले लोगों की जीवन रक्षा करते हैं। अब तक वे ८ युवतियों तथा ६ युवकों की जीवन रक्षा कर चुके हैं। डूबती हुई ८ लाशें निकालकर पुलिस को भी उन्होंने सूचना दी है।

६. संदीप ऑटो चालक एम.जी.रोड आगरा ने अपने ऑटो को खूब सजा रखा है। वह यात्रियों को शीतल जल भी पिलाता है। वह दिनभर में जितनी सवारी ढोता है, शाम को २ रू. प्रति सवारी के हिसाब से दान कर देता है। जरूरतमंद रोगी को दवा दिलाना। गरीब रोगी को निःशुल्क अस्पताल पहुंचाकर दाखिल कराना, उसके भोजन की व्यवस्था को अपना दायित्व समझता है। इतना ही नहीं, अपने जन्मदिन ३१ दिसम्बर को निःशुल्क सवारियां ढोता है।

७. मुम्बई के परमवीर नामक ऑटोचालक के ऑटो में विगत दिसम्बर में एक सवारी भूल से अपना बैग छोड गया। यात्री स्टैण्ड से दूसरा ऑटो कर जा चुका था। इसने जब वह बैग देखा तो उसमें रखे मोबाईल द्वारा उस यात्री की खोज की और उसका पता लगाकर उसे उसमें रखे डेढ लाख रूपये के आभूषण सहित बैग वापिस कर दिया। इस उपकार पर बैग के मालिक ने उसे इनाम देना चाहा पर उस चालक ने यह कहकर मना कर दिया कि वह अपनी मेहनत की कमाई से अपने परिवार को पालता है।

ईमानदारी, मानवता, सहानुभूति की ये घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि गरीब लोगों में अभी भी ईमानदारी एवं सहानुभूति शेष है। हमें ऐसे लोगों पर गर्व है जो देश का मान सम्मान बनाए रखते हैं। ******

चौबीस अक्षरों में गुँथी गायत्री है बड़ी रहस्यमय

गायत्री वैदिक संस्कृत का एक छंद है, जिसमें आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण, कुल २४ अक्षर होते हैं। गायत्री शब्द का अर्थ है- प्राण-रक्षक। 'गय' कहते हैं प्राण को, 'त्री' कहते हैं त्राण- संरक्षण करने वाली को। जिस शक्ति का आश्रय लेने पर प्राण का, प्रतिभा का, जीवन का संरक्षण होता है, उसे गायत्री कहा जाता है। यह छोटा सा मंत्र भारतीय संस्कृति, धर्म एवं तत्वज्ञान का बीज है। इसी के थोड़े से अक्षरों में सन्निहित प्रेरणाओं की व्याख्यास्वरूप चारों वेद बने। 'ॐ भूर्भुवः स्वः' यह गायत्री का शीर्ष कहलाता है। शेष आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण हैं; जिनके कारण उसे त्रिपदा कहा गया है। एक शीर्ष, तीन चरण, इस प्रकार उसके चार भाग हो गए, इन चारों का रहस्य एवं अर्थ चारों वेदों में है। ऋग्वेद में ६/६२/१०, सामवेद में २/८/१२, यजुर्वेद वा०सं० में ३/३५-२२/६-३०/२-३६/३, अथर्ववेद में ११/७१/१ में गायत्री की महिमा विस्तारपूर्वक गाई गई है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में गायत्री मंत्र का उल्लेख अनेक स्थानों पर है; ऐतरेय ब्राह्मण ४/३२/२-५/५/६-१३/८, १६/८, कौषीतकि ब्राह्मण २२/३-२६/१०, गोपथ ब्राह्मण १/१/३४, दैवत ब्राह्मण ३/२५, शतपथ ब्राह्मण २/३/४/३६-२३/६/२/६-१४/६/३/११। तैत्तिरीय सं. १/५/६/४-४/१/१, मैत्रायणी सं. ४/१०/३-१४६/१४।

आरण्यकों में गायत्री का उल्लेख इन स्थानों पर है- तैत्तिरीय आरण्यक १/१/२१०/२७/१, बृहदारण्यक ६/३/११/४/८। उपनिषदों में इस महामंत्र की चर्चा निम्न प्रकरणों में है- नारायण उपनिषद् १५-२; मैत्रेयी उपनिषद् ६/७/३४; जैमिनी उपनिषद् ४/२८/१; श्वेताश्वतर उपनिषद् ४/१८।

सूत्र ग्रन्थों में गायत्री का विवेचन निम्न प्रसंगों में आया है- आश्वलायन श्रौतसूत्र ७/६/६-८/१/१८, शांखायन श्रौतसूत्र २/१०/२-१२/७-५/५/२-१०/६/१०-६/१६, आपस्तंभ श्रौतसूत्र ६/१८/१, शांखायन गृह्यसूत्र २/५/१२, ७/१६, ६/४/८, कौषीतकि सूत्र ६१/६, खगटा गृह्यसूत्र २/४/२१, आपस्तंभ गृह्यसूत्र २/४/२१, बौधायन ध०शा० २/१०/१७/१४, मान०ध०शा० २/७७, ऋग्विधान १/१२/५, मान०गृ०सू० १/२/३-४/४/८-५/२

गायत्री महामंत्र में चौबीस अक्षर हैं-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस महामंत्र में अक्षरों की गणना इस प्रकार की जाती है-

तदादिवर्णगानर्धान् वर्णानगण्यस्तु तान्।
'ण्यं' वर्णस्य च द्वौ भागौ 'णि' 'यं' कर्तुं च छान्दसे।।
इयादिपूरणे सूत्रे ध्वनिभेदतया पुनः।
चतुर्विंशतिरेवं च वर्णा मंत्रे भवन्त्यतः।।

अर्थात्- गणना में 'तत्' आदि वर्णों में अर्द्धाक्षरों को नगण्य मानकर, उन्हें एक ही अक्षर गिना जाता है। ऐसी स्थिति में ध्वनि-भेद के आधार पर छंदः प्रयोग में 'इयादिपूरणे' सूत्रानुसार 'ण्यं' वर्ण को 'णि' और 'यं' इन दो भागों में बांट लिया जाता है। इस प्रकार चौबीस की संख्या पूरी हो जाती है।

१.तत्, २.स, ३.वि, ४.तु, ५.र्व, ६.रे, ७.णि, ८.यं, ९.भ, १०.र्गो, ११.दे, १२.व, १३.स्य, १४.धी, १५.म, १६.हि, १७.धि, १८.यो, १९.यो, २०.नः, २१.प्र, २२.चो, २३.द, २४.यात्।

तत्वज्ञानियों ने इन अक्षरों में बीज रूप में विद्यमान उन शक्तियों को पहचाना, जिन्हें चौबीस अवतार, चौबीस ऋषि, चौबीस शक्तियों तथा चौबीस सिद्धियां कहा जाता है। देवर्षि, ब्रह्मर्षि तथा राजर्षि इसी उपासना के सहारे उच्च पदासीन हुए हैं। 'अणोरणीयान महतो महीयान' यही महाशक्ति है। छोटे से छोटा चौबीस अक्षर का कलेवर, उसमें ज्ञान और विज्ञान का सम्पूर्ण भांडागार भरा हुआ है। सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं, जो गायत्री में न हो। उसकी उच्च स्तरीय साधनाएँ कठिन और विशिष्ट भी हैं, पर साथ ही सरल भी इतनी हैं कि उन्हें हर स्थिति में व्यक्ति बड़ी सरलता और सुविधाओं के साथ सम्पन्न कर सकता है। इसी से उसे सार्वजनीन और सार्वभौम माना गया। नर-नारी, बाल-वृद्ध बिना किसी जाति व संप्रदाय-भेद के उसकी आराधना प्रसन्नतापूर्वक कर सकते हैं और अपनी श्रद्धा के अनुरूप लाभ उठा सकते हैं।

'गायत्री संहिता' में गायत्री के २४ अक्षरों की शाब्दिक संरचना रहस्ययुक्त बताई गई है और उन्हें ढूँढ निकालने के लिए विज्ञजनों को प्रोत्साहित किया गया है। शब्दार्थ की दृष्टि से गायत्री की भाव-प्रक्रिया में कोई रहस्य नहीं है। सद्बुद्धि की प्रार्थना उसका प्रकट भावार्थ एवं प्रयोजन है। यह सीधी सादी सी बात है, जो अन्यान्य वेदमंत्रों तथा आप्तवचनों में अनेकानेक स्थानों पर व्यक्त हुई है। अक्षरों का रहस्य इतना ही है कि साधक को सत्प्रवृत्तियां अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रेरणा को जो जितना ग्रहण कर लेता है, वह उसी अनुपात से सिद्ध पुरूष बन जाता है। कहा गया है-

चतुर्विंशतिवर्णेर्या गायत्री गुम्फिता श्रुतौ।
रहस्ययुक्तं तत्रापि दिव्यैः रहस्यवादिभिः।। **गायत्री संहिता ८५**

अर्थात् वेदों में जो गायत्री चौबीस अक्षरों में गुंथी हुई है, विद्वान लोग इन चौबीस अक्षरों के गूंथने में बड़े-बड़े रहस्यों को छिपा बतलाते हैं।

******

कुछ समय पूर्व की बात है, माघ के मास में घनघोर पानी बरसा। दूर-दूर तक जल ही जल नजर आता था। ऊपर उड़ती दो बतखों की दृष्टि एक कछुए पर पड़ी, जो एक पेड़ की टहनी मुँह से पकड़े किसी तरह स्वयं को प्रकृति के प्रहार से बचाने में लगा था।

बतखों को कुछए पर दया आ गई और उसके पास जाकर बोलीं- "आओ कुछए भाई! तुम टहनी पकड़े रहा और हम तुम्हें उडाकर सूखी जमीन तक पहुंचा देते हैं। बस किसी भी स्थिति में अपना मुँह न खोलना।" कुछए ने बिना सीख को समझे हां कर दी। बतखों ने टहनी के सिरे पकड़े और पलक झपकते हुए आसमान में जा पहुंची। नीचे जमीन पर खडे कुछ बच्चों ने यह अचरज भरा दृश्य देखा और कुछए की ओर इशारा करते हुए हँसने लगे। बच्चों का खेल देखकर कुछआ क्रोध से भर उठा और पलटकर चिल्लाने लगा। मुँह खोलते ही उसकी टहनी पर पकड़ ढीली हो गई और कुछआ जमीन पर आ गिरा।

अविवेक असमय मुंह खोलने पर विवश कर देता है और मूढता का परिणाम विनाशकारी ही होता है।

एक बाप का फैसला

क्या बताऊँ मम्मी, आजकल तो, बासी कढ़ी में भी उबाल आया हुआ है। जबसे पापाजी रिटायर हुए हैं, दोनों लोग फिल्मी हीरो हीरोइन की तरह दिन भर अपने बगीचे में ही झूले पर विराजमान रहते हैं। न अपने बालों की सफेदी का लिहाज है न बहू बेटे का, इस उम्र में दोनों मेरी और नवीन की बराबरी कर रहे हैं। ठीक है मां मैं आपसे बाद में बात करती हूं, शायद सासु मां आ रही हैं।

शायद सासु मां ने बहू की बातें कमरे के बाहर सुन ली थी, पर नजरआंज करते हुए खामोशी से चाय सोनम को दे दी। सासू मां, बहू सोनम को चाय देने के पश्चात पति देव अशोक जी के लिए चाय ले जाने लगी, ऐसा देखकर बहू सोनम के चेहरे पर व्यंगात्मक मुस्कान तैर गयी। पर सासू मां, समझदारी दिखाते हुए बहू की इस नाजायज हरकत को नजरअंदाज करते हुए सिर झुकाए वहां से निकल गई। पति के रिटायर होने के बाद कुछ दिन प्रभा की यही दिनचर्या हो गयी थी।

प्रभाजी ने सारी उम्र तो अपने बच्चों के लिए लगा दी थी। कोठीनुमा घर अशोक और प्रभा का जीवनभर का सपना था, जो उन्होंने बडी मेहनत से साकार किया था। ऐसे मनमोहक वातावरण में वहां पर लगा झूला मन को असीम शांति प्रदान करता। पहले वह और अशोक इस मनमोहक जगह में कम समय के लिए ही बैठ पाते थे। प्रभा अनमनी होतीं तो अशोक बड़े जिंदादिल शब्दों में कहते, पार्टनर रिटायरमेंट के बाद दोनों इसी झूले पर साथ बैठेंगे और खाना भी साथ में ही खायेंगे। आपकी हर शिकायत हम दूर कर देंगे। फिलहाल हमें बच्चों के लिये जीना है। बच्चों के कैरियर पर बहुत कुछ बलिदान करना पड़ा, खैर अब बेटा अच्छी नौकरी में था और बेटी भी अपने घर की हो चुकी थी। रिटायरमेंट के बाद घर में थोड़ी रौनक रहने लगी थी, अशोक जी को भी घर में रहना अच्छा लग रहा था।

पहले तो बड़े पद पर थे तो कभी उनके कदम घर में टिकते ही नहीं थे। लेकिन उनकी बहू सोनम अपने पति नवीन को उसके माता पिता के लिये ताने देने का कोई मौका न छोड़ती। उसने उस कोने के बगीचे से छुटकारा पाने के लिये नवीन को एक रास्ता सुझाते हुए कहा, 'क्यों न हम बड़ी कार खरीद लें...नवीन'। 'आईडिया तो अच्छा है पर रखेंगे कहां एक कार रखने की ही तो जगह है घर में', नवीन थोडा चिंतित स्वर में बोला। 'जगह तो है न, वो गार्डन तुम्हारा.....जहां आजकल दोनों लव बर्ड्स बैठते हैं।' सोनम व्यंग्यात्मक स्वर में बोली। 'थोड़ा तमीज से बात करो', नवीन क्रोध से बोला। लेकिन फिर भी सोनम ने अपने पति को पापा जी से बात करने का मन बना लिया।

अगले दिन नवीन कुछ कार की तस्वीरों के साथ शाम को अपने पिता के पास गया और बोला, 'पापा! मैं और सोनम एक बड़ी गाड़ी खरीदना चाहते हैं' 'पर बेटा एक बड़ी गाड़ी तो घर में पहले ही है, फिर उस नई गाड़ी को रखेंगे भी कहाँ?' अशोक जी ने प्रश्न किया। 'ये जो बगीचा है यहीं गैराज बनवा लेंगे, वैसे भी सोनम से तो इसकी देखभाल होने से रही और मम्मी कब तक देखभाल करेंगी? इन पेड़ों को कटवाना ही ठीक रहेगा। वैसे भी ये सब जड़े मजबूत घर की दीवारें कमजोर कर रहे हैं।' यह सुनकर प्रभा तो वहीं कुर्सी पर सीना पकड़ कर बैठ गईं, अशोक जी ने क्रोध को काबू में करते हुए कहा, मुझे तुम्हारी मां

से भी बात करके थोड़ा सोचने का मौका दो। क्या पापा.....मम्मी से क्या पूछना...वैसे भी इस जगह का इस्तेमाल भी क्या है नवीन थोड़ा चिड़चिड़ा कर बोला। 'आप दोनों दिन भर इस जगह कुछ सोचे समझे, चार लोगों का लिहाज किये बगैर साथ में बैठे रहते हैं। अब आप दोनों कोई बच्चे तो नहीं हो। लेकिन आप दोनों ने दिन भर झूले पर साथ बैठे रहने का रिवाज बना लिया है और ये भी नहीं सोचते कि चार लोग क्या कहेंगे? इस उम्र में मम्मी के साथ बैठने की बजाय आप अपनी उम्र के लोगों में उठा बैठी करेंगे तो वो ज्यादा अच्छा लगेगा न कि ये सब।'

और वह दनदनाते हुए अंदर चला गया। अंदर सोनम की बड़बड़ाहट भी जारी थी। अशोक जी कड़वी सच्चाई का एहसास कर रहे थे। पर आज की बात से तो उनके साथ प्रभा जी भी सन्न रह गई, अपने बेटे के मुंह से ऐसी बातें सुनकर दोनों का दिल भर आया था और टूट भी चुका था। रिटायरमेंट को अभी कुछ ही समय हुआ, जो थोडा सकून से गुजरा था। पहले की जिन्दगी तो भागमभाग में ही निकल गयी थीं, बच्चों के लिए सुख साधन जुटाने में। अशोक जी आज पूरी रात ऊहापोह में लगे रहे, कुछ सोचते रहे, कुछ समझते रहे और कुछ योजना बनाते रहे। लेकिन सुबह जब वे उठे तब बड़े शांत और प्रसन्न थे। वे रसोई में गये और खुद चाय बनाई। कमरे में आकर पहला कप प्रभा को उठा कर पकडाया और दूसरा खुद पीने लगे। आपने क्या सोचा? प्रभा ने रोआंसे लहजे में पूछा। मैं सब ठीक कर दूंगा, बस तुम धीरज रखो, अशोक बोले। पर हद से ज्यादा निराश प्रभा उस दिन पौधों में पानी देने भी न निकलीं, और न ही किसी से कोई बात की। दिन भर सामान्य रहा, लेकिन शाम को अपने घर के बाहर To Let का बोर्ड टंगा देख नवीन ने भौंचक्के स्वर में अशोक जी से प्रश्न किया, 'पापा माना कि घर बड़ा है पर ये To Let का बोर्ड किसलिए'?

'अगले महीने मेरे स्टॉफ के मिस्टर गुप्ता रिटायर हो रहे हैं तो वो इसी घर में रहेंगे', उन्होंने शान्तिपूर्ण तरीके से उत्तर दिया। हैरान नवीन बोला, 'पर कहां?' 'तुम्हारे पोर्शन में', अशोक जी ने सामान्य स्वर में उत्तर दिया। नवीन का स्वर अब हकलाने लगा था, 'और हम लोग' 'तुम्हें इस लायक बना दिया है दो तीन महीने में कोई फ्लैट देख लेना या कम्पनी के फ्लैट में रह लेना, अपनी उम्र के लोगों के साथ। अशोक एक-एक शब्द चबाते हुए बोल रहे थे। हम दोनों भी अपनी उम्र के लोगों में उठेंगे- बैठेंगे। तुम्हारी मां की सारी उम्र सबका लिहाज करने में निकल गयी। कभी बुजुर्ग तो कभी बच्चे।

अब लिहाज की सीख तुम सबसे लेना बाकी रह गयी थी। पापा मेरा वो मतलब नहीं था', नवीन सिर झुकाकर बोला। नहीं बेटा, तुम्हारी पीढी ने हमें भी प्रैक्टिकल बनने का सबक दे दिया, जब हम तुम दोनों को साथ देखकर खुश हो सकते हैं तो तुम लोगों को हम लोगों से दिक्कत क्यों है?' इस मकान को घर तुम्हारी मां ने बनाया, ये पेड़ और इनके फूल तुम्हारे लिए मांगी गयी न जाने कितनी मनौतियों के साक्षी हैं, तो यह अनोखा कोना छीनने का अधिकार मैं किसी को भी नहीं दूंगा। पापा आप तो सीरियस हो गये, नवीन के स्वर अब नम्र हो चले थे। ना बेटा....तुम्हारी मां ने जाने कितने कष्ट सहकर, कितने त्यागकरके मेरा साथ दिया। आज इसी के सहयोग से मेरे सिर पर कोई कर्ज नहीं है। इसलिए सिर्फ ये कोना ही नहीं पूरा घर तुम्हारी मां का ऋणी है। जब मंदिर में ईश्वर जोडे में अच्छा लगता है तो मां बाप साथ में बुरे क्यों लगते हैं? जिन्दगी हमें भी तो एक ही बार मिली है। इसलिए हम इसे अपने हिसाब से एंजॉय करना चाहते हैं।

******

मुस्कराते रहिए

हमारे एक दोस्त अमेरिका में रहते हैं। कपडे ड्राइक्लीन करने की दुकान है उनकी। पिछले दिनों भारत आए। उन्होंने एक किस्सा सुनाया। कहने लगे जब शुरू-शुरू में मैंने दुकान शुरू की, तो एक दिन सुबह एक ग्राहक कपड़े लेकर आया। उस दिन कड़ाके की सर्दी थी। तापमान शून्य था। मैंने कपड़े लेकर रसीद काट दी। वह मेरी तरफ देख रहा था। फिर बोला लगता है आज आपकी तबियत ठीक नहीं है। मैंने कहा नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। अमेरिकन ने कहा तो फिर आप के चेहरे से मुस्कान गायब क्यों है ? उसके जाने के बाद मैं काफी देर तक सोचता रहा कि वह ठीक ही कह रहा था। मैंने आइने में अपनी सूरत देखी। कोई भी मुझे देखकर यह कह सकता था कि मेरे चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं। फिर मैं जबरदस्ती मुस्कराया। मेरा चेहरा खिल उठा। तब से मैं बात-बात पर मुस्करा उठता हूँ। मैं खुश रहता हूँ। लोगों को भी अच्छा लगता है।

चीन में कहावत है कि जो व्यक्ति मुस्कराना नहीं जानता, उसे कभी भी दुकान नहीं खोलनी चाहिए। दुकान से मतलब है कोई भी काम, जहां लोगों से वास्ता पड़ता है। कोई आदमी कितने ही शानदार महंगे कपड़े पहन ले, कोई औरत कितना भी बनाव-श्रृंगार कर ले, अगर चेहरे पर मुस्कान नहीं है तो सब बेकार है। मुस्कान का मतलब है आप कितने अच्छे हैं। मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

मुस्कुरा कर आप किसी को भी अपना दोस्त बना सकते हैं। आप दो-चार अजनबियों के साथ बैठे हैं। जरा मुस्कुरा दीजिये। कुछ ही देर में बातचीत शुरू हो जायेगी। सभी के चेहरे खिल उठेंगे। जो दुकानदार ग्राहक को देखते ही मुस्करा कर स्वागत करता है, उसकी दुकान ज्यादा चलती है। वह और दुकानदारों से ज्यादा कमाता है। मुस्कान सफलता का एक रहस्य है। जो व्यक्ति मुस्कराते हुए काम करता है, वह काम से कभी बोर नहीं होता। वह औरों से ज्यादा काम कर जाता है। जिसका चेहरा आम तौर पर लटका रहता है, समझ लीजिए काम ही नहीं, जिंदगी भी उसे बोझ लगती है। सुबह-सबेरे जो व्यक्ति मुस्कुराते हुए उठता है, उसका सारा दिन हंसी-खुशी से गुजरता है।

दुनिया में हर कोई खुश रहने के बहाने ढूंढता है। अगर आप किसी को कुछ क्षणों के लिए सुख दे सकते हैं तो क्यों नहीं देते? सुख हमारे अंदर से उपजता है। मुस्कुराहट उस सुख की अभिव्यक्ति है। मुस्कुराकर किसी को काम करने के लिए कहिए, वह शायद ही इनकार करेगा। चेहरा लटका कर बात कीजिए, बनता काम भी बिगड सकता है। तो मुस्कान की अपनी आदत बनाइए। लेकिन नकली मुस्कान नहीं। पता चलना चाहिए कि आप जो कुछ कह रहे हैं, दिल से कह रहे हैं। अगर मुस्कराना आपकी आदत नहीं है तो छोटे से बच्चे को देखिये। जो कुछ ही दिन पहले इस दुनिया में आया है। उसे मुस्कराना किसने सिखाया है? आप मुस्कराना सीख सकते हैं। आइने के सामने मुस्कराने का अभ्यास कीजिये। कुछ दिनों में आदत पड जाएगी। आपकी मुस्कान आपकी जिंदगी बदल सकती है और दूसरों को भी।

याद रखिये, मुस्कान पर एक पैसा भी खर्च नहीं होता, लेकिन आप बहुत कुछ पा जाते हैं, खिला हुआ चेहरा खुशियां बांटता है, घर हो या बाहर, कोई भी व्यक्ति किसी का लटका हुआ चेहरा देखना पसंद नहीं करता। मुस्कान से थकान दूर होती है। मुस्कराहट निराश, निरूत्साहित व्यक्ति के लिए अंधेरे में रोशनी की किरण के समान है। मुस्कान न तो मांगी जाती है, न ही उधार दी जाती है। जितनी बाटेंगे, उतनी ही फैलती चली जाएगी। जिसे आप कुछ नहीं दे सकते, उसे मुस्कान तो दे ही सकते हैं।

******

पीपल है ईश्वर के विश्व रूप का दर्शन

भारतीय संस्कृति में कुछ वृक्षों को दिव्य वृक्षों की श्रेणी में रखा गया है। पीपल उनमें से एक है। पीपल का पेड़ औषधि विज्ञान की दृष्टि से जितना हितकारी है, धार्मिक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। भागवत गीता में भगवान कहते हैं, 'वृक्षों में सर्वोत्तम मैं पीपल हूं। ' ऋग्वेद में, इसे देव वृक्ष कहा गया है। जो संसार को सब कुछ देता है।

दिन-रात प्राणवायु देने वाले पीपल की सकारात्मक ऊर्जा के सहारे, महात्मा बुद्ध से लेकर अनेक मुनि-ऋषियों ने इसके नीचे ज्ञानार्जन किया है। औषधीय गुणों के कारण, पीपल के वृक्ष को 'कल्पवृक्ष' भी कहा गया है। यजुर्वेद में, पीपल को हर यज्ञ की जरूरत बताया है। अथर्ववेद, इसे देवताओं का निवास स्थान बताता है। स्कंदपुराण में वर्णित है - पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में हरि और फलों में सभी देवताओं का वास है। पीपल का पेड़ भगवान के विश्व रूप का ही आध्यात्मिक दर्शन करता है। क्योंकि शास्त्रों में, ब्रह्मांड को उल्टा, वृक्ष सदृश बताया है। इस सृष्टि रूपी उल्टे पेड़ के ऊर्ध्व में इसकी विज, दिव्य ज्योतिबिंदु स्वरूप शिव परमात्मा है।

श्रीमद्भागवत में उल्लेख मिलता है-द्वापर युग में परमधाम जाने से पूर्व, तपस्वी के रूप में श्रीकृष्ण, दिव्य पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर परमात्मा के ध्यान में लीन हुए। शास्त्रों में कहा गया है कि कल्पान्त के प्रलयकाल में, जब सृष्टि जलमय हुई, तब पीपल के पत्ते पर अंगूठा चूसते हुए नवजात श्रीकृष्ण का आविर्भाव हुआ।

इसके आध्यात्मिक अर्थ हैं कि पीपल के पत्ते की आकृति गर्भाशय जैसी है। उस पर लेटे हुए बालकृष्ण का आगमन, सतयुगी सृष्टि के शुभारंभ सूचक है। पीपल की श्रेष्ठता के बारे में ग्रंथ कहते हैं- 'मूलतः ब्रह्मरूपाय, मध्यतो विष्णुरुपिणः, अग्रतः शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नमः। 'अर्थात, इसके मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा अग्रभाग में शिव का वास है। शास्त्रों के मुताबिक, यदि कोई व्यक्ति पीपल के नीचे शिवलिंग स्थापित कर पूजा करता है, तो उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

******

SUBSCRIBE

MAITHIL BRAHMIN

YouTube

आप यू-टूब मैथिल ब्राह्मण चैनल पर अवश्य देखें कि- मूल ग्राम, खेड़ा, ऋषि गोत्र क्या होता है ? और शादी में ऋषि गोत्र की आवश्यकता पड़ती है या फिर खेड़ा और मूलग्राम की।

मिथिला के बृजस्थ ब्राह्मणों का इतिहास जानने हेतु बेवसाइट अवश्य देखें

www.maithilbrahminmahasabha.in

नीति वचन

भारतीय साहित्य-सरोवर अनेक संस्कृत के कवियों द्वारा अलंकृत सूक्तियों तथा सदुपदेशों, नीति वचनों से भरा पड़ा है। इसके साथ ही असंख्य नीति वाक्य भी सरोवर की शोभा बढ़ा रहे हैं। उस साहित्य-सरोवर से कुछेक चुने हुए अमूल्य मोती हम मैथिल ब्राह्मण सन्देश मासिक पत्रिका में अपने सुधी पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं-
सम्पादक

अति रूपेण वै सीता, अति गर्वेण रावणः।
अतिदानात् बलिर बद्धो, अति सर्वत्र वर्जयेत्।।

(चाणक्य नीति)

(अत्यन्त रूपवती होने के कारण सीता का अपहरण हुआ, अधिक अभिमान होने के कारण रावण मारा गया। अत्यधिक दान देने के कारण राजा बलि को कष्ट उठाना पड़ा। इसलिए अति किसी भी कार्य में नहीं करनी चाहिए। अति का सर्वत्र त्याग कर देना चाहिए)

किं जातैर्बहुभिः पुत्रैः शोक सन्तापकारकैः।
वरमेकः कुलाऽलम्बी यत्र विश्राम्यते कुलम्।।

(चाणक्य नीति)

(दुःख देने वाले, हृदय को जलाने वाले बहुत से पुत्रों को उत्पन्न करने से क्या लाभ। कुल का सहारा देने वाला एक ही पुत्र श्रेष्ठ होता है, उसके आश्रय में पूरा कुल सुख भोगता है)

लालयेत् पंच वर्षाणि, दश वर्षाणि ताड़येत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत्।।

(चाणक्य नीति)

(पांच वर्ष तक बच्चे को लाड प्यार से रखें एवं दस वर्ष का होने पर उसे ताडना देनी चाहिये, लेकिन बच्चा जब १६ वर्ष का हो जाये, तब उसे मित्र जैसा व्यवहार ही करना चाहिए)

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्ज्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भम्पयोमुखम्।।

(चाणक्य नीति)

(जो आंख के ओट होने पर काम बिगाड़े और सामने होने पर मीठी मीठी बात बनाकर कहे- ऐसे मित्र को विष से भरे घड़े के समान, जिसके मुंहड़े पर दूध हो, छोड देना चाहिये)

ऋणकर्ता पिता शत्रुर्माता च व्याभिचारिणी।
भार्या रूपवती शत्रुः पुत्रः शत्रुरपण्डितः।।

(चाणक्य नीति)

(ऋण करने वाला पिता और व्यभिचारिणी माता शत्रु है, सुन्दर स्त्री शत्रु है और मूर्ख पुत्र (भी) शत्रु (ही) है।)

मातृवत्परदारांश्च परद्रव्याणि लोष्ठवत्।
आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पश्यति।।

(चाणक्य नीति)

(जो दूसरों का स्त्रियों को माता के समान, दूसरे के धन को ढेला के समान, और अपने समान सब प्राणियों को देखता है। वही (ठीक) देखता है।)

****

समाचार

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम

दिनांक ११.०७.२०२१ दिन रविवार को हीरालाल शर्मा सेवानिवृत प्राचार्य द्वारा लिखित ''गीता प्रसून'' तथा तोताराम शर्मा ''सरस'' द्वारा रचित ''सरस भाव मंजरी'' पुस्तकों का विमोचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। विमोचन करते हुए श्री राम मंदिर भूमि पूजन के मुख्य आचार्य पंडित श्री गंगाधर पाठक वेदाधाचार्य ने दोनों ही पुस्तकों को मनुष्य जीवन के आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवनोद्धार के लिए बहुत ही उपयोगी बताया। इससे पूर्व श्री ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण शाखा सभा मथुरा के अध्यक्ष हीरालाल शर्मा ने शाल उढ़ाकर मुख्य अतिथि पं. गंगाधर पाठक का स्वागत किया। इस अवसर पर सर्वश्री पं. तोताराम शर्मा, सुरेश चन्द्र शर्मा व्यास, के.एस. शर्मा, चन्द्र प्रकाश शर्मा, अजय कुमार शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा, जयप्रकाश शर्मा, मूलचन्द शर्मा (कवि), नरेन्द्र शर्मा, शिवराम पाठक, योगेश द्विवेदी आदि उपस्थित रहे। अन्त में नरेन्द्र शर्मा ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

लेखक - परिचय

नाम	- हीरालाल शर्मा
पिता	- पं. श्री बाबूलाल शर्मा
माता	- श्रीमती सरवती देवी
जन्मस्थान	- गाँव मीर, मौजा खरवा, तहसील मांट, डाकखाना - राया - 281004, जिला मथुरा (उ.प्र.)
वर्तमान पता	- 13, तत्वदर्शी वाटिका, एन.एच.-2, नवादा, मथुरा (उ.प्र.) पिन-281006
ई-मेल	- sharma_hl123@rediffmail.com
मोबाइल	- 9411086083
जन्म तिथि	- 30 जुलाई 1954 (अभिलेखानुसार)

शिक्षा	- गाँव की बेसिक प्राइमरी पाठशाला से कक्षा 3 तक, गाँव धंगोई की प्राइमरी पाठशाला से कक्षा 5 तक, राष्ट्रीय इण्टर कालेज राया से इण्टरमीडिएट, बी.एस.ए. कालेज मथुरा से बी.एस-सी., वार्ष्णेय कालेज अलीगढ़ से बी.एड्. तथा एम.ए. (गणित), आगरा विश्वविद्यालय (अब डा.भी.रा. अम्बेडकर विश्वविद्यालय) से सरकारी सेवा के दौरान । ज्योतिष विद्या का ज्ञान अपने चाचा पं. श्री खजनलाल शास्त्री जी से प्राप्त किया।
कार्यक्षेत्र	- केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार के अन्तर्गत चालित विद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक पदों पर मथुरा, बीकानेर (राज.), हजरतपुर (फिरोजाबाद), इलाहाबाद (प्रयागराज) उ.प्र. में कार्य किया तथा दि. 31-7-2014 को केन्द्रीय विद्यालय सी.ओ.डी. छिवकी, नैनी, इलाहाबाद से प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त ।
साहित्य	- आकाशवाणी केन्द्र बीकानेर (राज.) से वार्ताओं का प्रसारण, विभिन्न सामाजिक विषयों पर लेखों का प्रकाशन । काव्य अभिरुचि।

वर-कन्या सूची

1- चेतन (विक्रम) पुत्र श्री महेन्द्रकुमार, जन्मतिथिः 27.12.1990, शिक्षा-12, जॉब-प्राईवेट कम्पनी, तालानगरी, अलीगढ़। निवासी- माली नगला, धनीपुर मण्डी, अलीगढ़। मोः 7417302188
पिता का गोत्र- अरौठिया, माता का गोत्र- जलेसरिया, ऋषि गोत्र- भारद्वाज।

2- हिमांशु मिश्रा पुत्र श्री राजकुमार मैथिल, जन्मतिथिः 01.07.1994, शिक्षाः 9, जॉबः प्राईवेट वर्क पता- मठिया, कृष्णापुरी, गली नं. 3, अलीगढ़। सम्पर्क मोः 8433047195, 9319548545
(पिता का ऋषि गोत्र- काश्यप, माता का ऋषि गोत्र-पाराशर)

3- कमल पुत्र श्री कीर्तिपाल शर्मा, जन्मतिथिः 05.03.1992 शिक्षाः ग्रेजुएट, जॉबः नगर निगम, पता- सती नगर, आगरा। मोः 9719095555 (पिता का खेडा- दुनैठियावार, माता का खेड़ा- विसावलीवार)

4- नरेन्द्र शर्मा पुत्र श्री एफ.एल. शर्मा, जन्मतिथिः 10.10.1989, शिक्षाःबी-एस.सी. (3डी एनीमेशन), जॉबः 3डी डिजाइनर पता- सिकन्दरा आगरा। सम्पर्क मोः 9411083249
(पिता का खेडा- सुसानिया, माता का खेड़ा- बारौलिया)

5- कु. निकिता पुत्री श्री ऋषि कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 26.02.1989, शिक्षाः बी.कॉम, एम.बी.ए. जॉबः कोचिंग सेन्टर, पता- नागलोई, दिल्ली। सम्पर्क मोः 9990119290
(पिता का खेडा- सुसानिया, माता का खेड़ा- जलेसरिया)

6- पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा पुत्र स्व0 श्री रामबाबू शर्मा, जन्मतिथिः 31.121988, लम्बाई 5'7" शिक्षाः बी0काम, जॉबःएकाउन्ट पता- बिहारी नगर, पला रोड, अलीगढ।
सम्पर्क मोः 8273403077, 8471093388 (पुष्पेन्द्र)
(पिता का खेडा- पोपालिया, माता का खेड़ा- सुसानिया)

7- आशीष शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सतीश मिश्रा, जन्मतिथिः 02.11.1997, शिक्षाः 9, जॉब-प्राईवेट नौकरी, पता-अजमेर। मोः 8290301791 (खेडा राजौरिया)

8- प्रियंका शर्मा पुत्री श्री शशिकान्त शर्मा, जन्मतिथिः 13.02.1990, शिक्षाः एम.कॉम, जॉबः कम्पयूटर जॉब, पता-अजमेर। मोः 9829400449 (खेडा बरमानिया)

9- सीमा शर्मा पुत्री श्री दीपेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 07.03.1990, शिक्षाः एम.ए. पता-अजमेर। मोः 9929718609 (खेडा सुसानिया)

10- मोनिका शर्मा पुत्री श्री रविन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 06.10.1992, शिक्षाः बी.एस.सी., जॉब-सॉफ्टवेयर व नेटवर्किंग डिप्लोमा। पता- आगरा। मोः 9794866763 (खेडा-बिसावलीवार)

11- ऋचा शर्मा पुत्री श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 05.03.1990, शिक्षाः एमसीए, पता- आगरा। मोः 9568155860 (खेडा- बरामनीवार)

12- सपना मिश्रा पुत्री श्री नरेन्द्र कुमार मिश्रा, जन्मतिथिः 08.07.1993, शिक्षा-स्नातक, पता-अजमेर। मोः 7689918600 (खेडा-भालईवार)

13- खुशबू मिश्रा पुत्री स्व0 श्री नवीन मिश्रा, जन्मतिथिः 21.09.1999, शिक्षाः 12, पता-अजमेर। मोः 8426998137 (खेडा-जलेसरिया)

14– इशिता शर्मा पुत्री श्री नन्दकुमार झा, जन्मतिथि 20.02.1995, शिक्षाः एम0एस0सी0, पता–लखनऊ। मोः 9838821908 (खेडा–पडेलिया)

15– आयुष कुमार झा पुत्र श्री नन्दकुमार झा, जन्मतिथिः 29.08.1992, शिक्षाः जॉब–इवंटरी मैनेजर वन प्लस पता–लखनऊ। मोः 9838821908 (खेडा–पडैलिया)

16– निफेश शर्मा पुत्र श्री रजनीकान्त नंदलाल शर्मा, जन्मतिथिः 23.10.1990, शिक्षाः 12, जॉब–हर्सिस अहमदाबाद। मोः 9909265682 (खेडा– अकोसिया)

17– आशीष शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सतीश मिश्रा, जन्मतिथिः 02.11.1997, शिक्षा– 9, जॉब–प्राईवेट, नौकरी पता– अजमेर। मोः 8290301791 (खेडा राजौरिया)

18– दीपेन्द्र शर्मा पुत्र श्री कुलदीप शर्मा, जन्मतिथिः 30.09.1993, शिक्षाः बी0एस0सी0– जॉब– कोटा। मोः 9461009024 (खेडा– तुर्रावार)

19– जितेन्द्र शर्मा (आंशिक मंगली) पुत्र श्री रमेश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 24.11.1990, शिक्षा– बी कॉम, जॉब– कमोडिटी एक्सचेंज, पता–उदयपुर। मोः 8112297283 (खेडा– टिकारीवार)

20– रोहित शर्मा पुत्र श्री चन्द्रभान शर्मा, जन्मतिथिः 19.11.1990, शिक्षाः एम0सी0ए0 जॉब–आई0टी0 कम्पनी पुने। मोः 9833400508 (खेडा–पैडोलिया)

21– राजेश शर्मा पुत्र श्री स्व0 रघुनाथ शर्मा, जन्मतिथिः 13.01.1990, शिक्षाः एम0ए0, जॉब–गैस प्लांट, अजमेर। मोः 701498693 (खेडा– अकोसिया)

–:वर–कन्या सूची हेतु आवश्यक निर्देशः–

- वर–कन्या सूची में आप भी अपना बच्चों के नाम प्रकाशित करवा सकते हैं, इसके लिए आपको ''विवाह विवरण फॉर्म'' पूर्ण भरकर हमको **9259647216** पर व्हॉटसएप करना होगा।
- पत्रिका में छपे ''विवाह विवरण फॉर्म'' पर भरी जानकारियाँ ही स्वीकार की जायेंगी, अलग से कुछ भी जानकारी न भेजें।
- उपरोक्त वर कन्या सूची में आये नामों में से किसी का विवाह तय हो जाता है तो उसकी जानकारी आप उपरोक्त व्हॉटसएप पर अवश्य दें, ताकि उस नाम को वर कन्या सूची से हटा सकें।
- उपरोक्त सूची में से शादी–सम्बन्ध करने से पहले आप स्वयं पूर्णतया छानबीन भी कर लें।

SUBSCRIBE

MAITHIL BRAHMIN YouTube

आप यू–टूब मैथिल ब्राह्मण चैनल पर अवश्य देखें कि– मूल ग्राम, खेड़ा, ऋषि गोत्र क्या होता है ? और शादी में ऋषि गोत्र की आवश्यकता पड़ती है या फिर खेड़ा और मूलग्राम की।

विवाह विवरण फॉर्म

प्रबन्ध सम्पादक जी
मैथिल ब्राह्मण सन्देश मासिक पत्रिका, अलीगढ़।

प्रिय महोदय,

निम्नलिखित विवाह विवरण 'मैथिल ब्राह्मण सन्देश मासिक पत्रिका' में प्रकाशित करने की कृपा करें।

1. युवक / युवती का नाम : .....
2. जन्मतिथि : .....शिक्षा.....
3. युवक / युवती का जॉब : .....
4. पता:.....मोबाईल.....
5. युवक / युवती के पिता का नाम : .....
6. युवक / युवती के पिता का ऋषि गोत्र : .....खेड़ा.....मूलग्राम.....
7. युवक / युवती की माता का ऋषि गोत्र : .....खेड़ा.....मूलग्राम.....

मैं प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण सही है, कोई तथ्य छिपाया नहीं गया है तथा उपरोक्त युवक / युवती बालिग एवं अविवाहित है, उसका सम्बन्ध अभी तय नहीं हुआ है।

दिनांक.....

हस्ताक्षर पिता/माता/संरक्षक

नियम:-

1- मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका में विवाह योग्य युवक - युवतियों के विवरण तीन बार निःशुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। निःशुल्क विवरण उन्हीं के प्रकाशित किये जायेंगे, जो पत्रिका के वार्षिक अथवा मासिक सदस्य हैं।

2- तीन से अधिक बार विवरण को प्रकाशित कराने के लिए 50 रू0 प्रति बार देना होगा।

3- उपरोक्त विवरण में सभी सातों बिन्दुओं को भरना अनिवार्य है, एक भी बिन्दु न भरने की स्थिति में विवरण फॉर्म पत्रिका में नहीं छापा जायेगा।

4- उपरोक्त विवरण फॉर्म को पूर्ण भरकर अपने क्षेत्रीय प्रतिनिधि को दे दें अथवा भरे हुये फॉर्म का मोबाईल से फोटो खींचकर हमें 9259647216 पर व्हॉटसअप कर दें।

5- उपरोक्त फॉर्म में यदि किसी को अपना ऋषि गोत्र / मूलग्राम पता न हो तो वह अपने स्थानीय मैथिल ब्राह्मण संगठन या जो सज्जन आपको पत्रिका उपलब्ध कराते हैं, उनसे पूछकर फार्म में भरें।

6- ऋषि गोत्र, खेड़ा या मूलग्राम क्या होता है ? इसकी अधिक जानकारी के लिये हमारे You Tube Channel - MAITHIL BRAHMIN को Subscribe कर Video देखें।

SUBSCRIBE
MAITHIL BRAHMIN
YouTube